नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 389, नई दिल्ली, रविवार 29 मार्च 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"सच्ची सफलता वही है,जो केवल ऊँचाई तक पहुँचने में नहीं,बल्कि दूसरों को साथ लेकर आगे बढ़ने में मिलती है।"

03 दिल्ली ट्रैफिक पुलिस को मिला टेक्नोलॉजी का बड़ा सहारा....
06 सफलता की दौड़ में बुनियादी शिक्षा का पतन
07 आधुनिक समाज में यौनता का अतिशय

आज राजधानी में सजेगा 'तीसरा परिवहन विशेष कॉन्क्लेव 2026' का मंच; मावलंकर हॉल में जुटेंगे देश के दिग्गज विशेषज्ञ

परिवहन विशेष न्यूज

राजधानी दिल्ली का प्रतिष्ठित मावलंकर हॉल (कॉन्स्टीट्यूशन क्लब) आज परिवहन क्षेत्र की सबसे बड़ी चर्चा का केंद्र बनने जा रहा है। 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र समूह द्वारा आयोजित "तीसरे परिवहन विशेष कॉन्क्लेव एवं एक्सीलेंस अवार्ड समारोह 2026" का भव्य आयोजन आज दोपहर 01:00 बजे से होने जा रहा है।

न्यायमूर्ति राजेश टंडन होंगे मुख्य अतिथि

इस गरिमामयी कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य अतिथि के रूप में माननीय न्यायमूर्ति श्री राजेश टंडन जी (पूर्व न्यायाधीश, उत्तराखंड उच्च न्यायालय एवं पीठासीन अधिकारी, दैनिक लोक अदालत, नैनीताल) करेंगे। उनके साथ देश के जाने-माने प्रशासनिक अधिकारी, कानूनी विशेषज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता 'गेस्ट ऑफ ऑनर' के रूप में मंच साझा करेंगे।

इन ज्वलंत विषयों पर होगी मुख्य चर्चा

आज के इस कॉन्क्लेव का मुख्य उद्देश्य परिवहन और समाज से जुड़ी गंभीर चुनौतियों का समाधान खोजना है। कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञ निम्नलिखित विषयों पर

अपने विचार और सुझाव साझा करेंगे:

जलवायु परिवर्तन एवं प्रदूषण: वाहनों से बढ़ते प्रदूषण को रोकने की रणनीति।

सड़क दुर्घटनाएं एवं ट्रैफिक जाम: सुरक्षित सफर और सुगम यातायात के आधुनिक विकल्प।

साइबर क्राइम: डिजिटल युग में परिवहन क्षेत्र की सुरक्षा।

महिला सुरक्षा: सार्वजनिक परिवहन को महिलाओं के लिए और अधिक सुरक्षित बनाना।

उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिया जाएगा 'एक्सीलेंस अवार्ड'

चर्चा के साथ-साथ, आज उन हस्तियों को भी सम्मानित किया जाएगा जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में समाज और देश के लिए मिसाल पेश की है।

ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज़ लिमिटेड द्वारा आयोजित यह कॉन्क्लेव सुरक्षित, स्वच्छ और आधुनिक परिवहन की दिशा में एक बड़ा मील का पत्थर साबित होने जा रहा है।

मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति राजेश टंडन: न्यायिक उत्कृष्टता और वैश्विक नेतृत्व की एक महान विरासत

भारतीय न्यायपालिका के स्तंभ, न्यायमूर्ति राजेश टंडन का परिचय देना हमारे लिए अत्यंत गर्व का विषय है। कानून और न्याय के प्रति अटूट समर्पण के साथ उनका करियर पांच दशकों से अधिक का रहा है। उत्तराखंड उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश के रूप में, न्यायमूर्ति टंडन कानूनी सुधारों के आधार स्तंभ रहे हैं। उन्होंने भारत सरकार के साइबर अपीलीय न्यायाधिकरण के अध्यक्ष और उत्तराखंड राज्य विधि आयोग के अध्यक्ष जैसे उच्च संवैधानिक पदों पर अपनी सेवाएं दी हैं।

मानवाधिकार और सुशासन के प्रणेता

न्यायपीठ से परे, न्यायमूर्ति टंडन का प्रभाव सामाजिक न्याय के हर क्षेत्र में झलकता है। मानवाधिकार आयोग के पूर्व सदस्य और भारत के प्रमुख राष्ट्रीय खेल निकायों (जैसे मुक्केबाजी और खो-खो फेडरेशन) के रिटर्निंग ऑफिसर के रूप में, उन्होंने हमेशा पारदर्शिता और नैतिक शासन का समर्थन किया है। उनकी प्रशासनिक कुशलता उनकी शैक्षणिक गहराई के समान ही अतुलनीय है, जिसका प्रमाण उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के सदस्य के रूप में उनकी भूमिका है।

मध्यस्थता (Arbitration) में वैश्विक मार्गदर्शक

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, न्यायमूर्ति टंडन एक प्रतिष्ठित निष्पक्ष मध्यस्थ हैं, जो सिंगापुर इंटरनेशनल आर्बिट्रेशन सेंटर (SIAC) और एशिया इंटरनेशनल आर्बिट्रेशन सेंटर (AIAC) के साथ पैनल में शामिल हैं। उनके विद्वत्तापूर्ण योगदान के लिए उन्हें दुनिया भर के प्रतिष्ठित संस्थानों से कई मानद डॉक्टरेट (Honorary Doctorates) और मानद प्रोफेसरशिप से सम्मानित किया गया है, जो प्रशासनिक और साइबर कानून में उनके वैश्विक प्रभुत्व को दर्शाता है।

वर्तमान कद और मार्गदर्शन

आज, वह 'एसोसिएशन ऑफ रिटायर्ड जजेस ऑफ सुप्रीम कोर्ट एंड हाई कोर्ट्स ऑफ इंडिया' के उपाध्यक्ष और 'यूरेशिया एफ्रो चैंबर ऑफ कॉमर्स' के लीगल हेड (एशिया) के रूप में कानूनी बिरादरी के भविष्य को आकार दे रहे हैं। IIM काशीपुर में 'प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस' और मेंटर के रूप में, वह कानून की अगली पीढ़ी के लिए एक प्रकाश स्तंभ बने हुए हैं।

परिवहन विशेष समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में चिकित्सा जगत में सम्मान प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ प्रोफेसर्स की कुछ जानकारी आपके समक्ष

प्रमुख वैज्ञानिक प्रो. (डॉ.) संजय के. राय : कोवैक्सिन ट्रायल के प्रमुख वैज्ञानिक प्रो. (डॉ.) संजय के. राय: जन-स्वास्थ्य में भारत की वैश्विक पहचान

मुख्य संपादक

AIIMS दिल्ली के वरिष्ठ प्रोफेसर ने
* शोध, नीति और टीकाकरण में रचा नया इतिहास
* 200+ शोध प्रकाशन,
* डब्लूएचओ जर्नल के संपादक,
* राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के नीति-निर्माता और वैश्विक मंचों के प्रतिष्ठित वक्ता

भारत के जन-स्वास्थ्य क्षेत्र में यदि किसी विशेषज्ञ ने चिकित्सा विज्ञान, अनुसंधान, नीति-निर्माण और जन-जागरूकता — इन चारों आयामों को एक साथ प्रभावशाली ढंग से जोड़ा है, तो वह नाम है प्रो. (डॉ.) संजय के. राय।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS), नई दिल्ली के सेंटर फॉर कम्युनिटी मेडिसिन के वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. राय आज न केवल देश के अग्रणी जन - स्वास्थ्य विशेषज्ञों में गिने जाते हैं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी भारत की वैज्ञानिक क्षमता और नेतृत्व का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। उनका करियर केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था को मजबूत बनाने, नई नीतियों को दिशा देने और वैश्विक स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान खोजने का एक सतत प्रयास है।

शैक्षणिक उत्कृष्टता और वैश्विक नेतृत्व

M.B.B.S, M.D. और FIPHA जैसी प्रतिष्ठित डिग्रियों से सुसज्जित डॉ. राय ने अपने शैक्षणिक जीवन में निरंतर उत्कृष्टता का परिचय दिया है।

वर्तमान में प्रो. (डॉ.) संजय के. राय

1. डब्लूएचओ - साउथ ईस्ट एशिया जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ के संपादक हैं, जो दक्षिण - पूर्व एशिया क्षेत्र में जन-स्वास्थ्य शोध और नीतिगत विमर्श का एक महत्वपूर्ण मंच है।
2. नेशनल मेडिकोस ऑर्गनाइजेशन (NMO), दिल्ली के अध्यक्ष के रूप में चिकित्सा समुदाय को संगठित करने और जनहित के मुद्दों को आगे बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

नीति-निर्माण में प्रभावशाली भागीदारी डॉ. राय केवल एक वैज्ञानिक ही नहीं, बल्कि एक प्रभावशाली नीति-निर्माता भी हैं। वे भारत सरकार के राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) के अंतर्गत सशक्त कार्यक्रम समिति (EPC) के गैर-सरकारी सदस्य के रूप में कार्य कर रहे हैं।

इस भूमिका में वे —

1. राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजनाओं की रूपरेखा तैयार करने
2. कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने और
3. स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सुलभ एवं प्रभावी बनाने

जैसे महत्वपूर्ण कार्यों में विशेषज्ञ सलाह प्रदान करते हैं। उनकी सिफारिशों का सीधा प्रभाव देश के करोड़ों नागरिकों के स्वास्थ्य पर पड़ता है।

प्रो. (डॉ.) संजय के. राय जी का अनुसंधान में अभूतपूर्व योगदान जन-स्वास्थ्य अनुसंधान के क्षेत्र में डॉ. राय का योगदान अत्यंत व्यापक और प्रभावशाली है। उनके नाम:

1. 200 से अधिक शोध प्रकाशन
2. 50 से अधिक शोध परियोजनाओं में सक्रिय भागीदारी और
3. अनेक अंतरराष्ट्रीय जर्नलों के संपादकीय बोर्ड की सदस्यता

दर्ज हैं।

उनके शोध कार्यों में

संक्रामक रोगों की रोकथाम, टीकाकरण रणनीतियां, स्वास्थ्य प्रणाली सुदृढ़ीकरण और महामारी प्रबंधन जैसे विषय प्रमुख रहे हैं। उनके शोध का उपयोग न केवल भारत में बल्कि कई अन्य देशों में भी स्वास्थ्य नीतियों के निर्माण में किया गया है।

प्रो. (डॉ.) संजय के. राय को प्राप्त सम्मान और मान्यता डॉ. राय के उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें प्रमुख हैं—

1. डॉ. जे. ई. पार्क मेमोरियल ओरेशन (IPHA)
2. इंडियन पब्लिक हेल्थ एसोसिएशन (IPHA) फेलोशिप

ये सम्मान उनके शोध और जन-स्वास्थ्य के क्षेत्र में दीर्घकालिक योगदान का प्रमाण हैं।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में निर्णायक भूमिका डॉ. राय ने

1. भारत सरकार और भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) द्वारा गठित विभिन्न तकनीकी और विशेषज्ञ समूहों में सक्रिय भूमिका निभाई है।
2. उन्होंने देश के प्रमुख स्वास्थ्य अभियानों को दिशा देने में योगदान दिया—

1. राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम
2. राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन
3. टीबी उन्मूलन कार्यक्रम

इन कार्यक्रमों के माध्यम से उन्होंने लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाली नीतियों और रणनीतियों के निर्माण में योगदान दिया।

प्रो. (डॉ.) संजय के. राय जी के विशेषज्ञता के प्रमुख क्षेत्र डॉ. राय की विशेषज्ञता बहुआयामी है, जिसमें शामिल हैं—

1. टीकाकरण और वैक्सीन नीति
2. संक्रामक रोग (HIV, TB, COVID-19, इन्फ्लूएंजा)
3. महामारी प्रबंधन और स्वास्थ्य आपदा प्रतिक्रिया
4. स्वास्थ्य प्रणाली सुदृढ़ीकरण

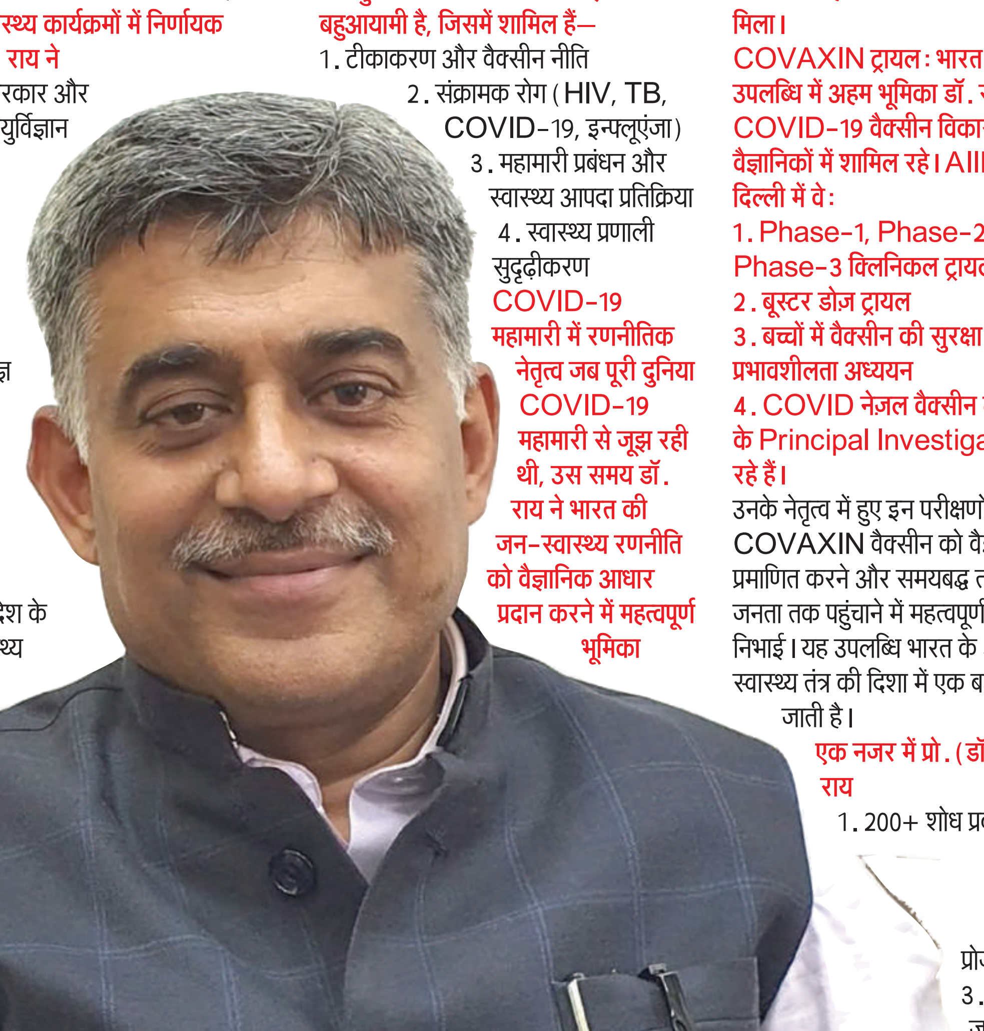

COVID-19 महामारी में रणनीतिक नेतृत्व जब पूरी दुनिया COVID-19 महामारी से जूझ रही थी, उस समय डॉ. राय ने भारत की जन-स्वास्थ्य रणनीति को वैज्ञानिक आधार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने देश के प्रमुख विशेषज्ञों के साथ मिलकर—

1. COVID-19 प्रबंधन पर 5 महत्वपूर्ण सर्वसम्मति वक्तव्य तैयार किए
2. नीति-निर्माताओं को वैज्ञानिक सुझाव दिए और
3. उच्च स्तर की बैठकों में भाग लेकर रणनीतिक दिशा तय करने में योगदान दिया

उनकी विशेषज्ञता का लाभ सीधे तौर पर भारत की महामारी प्रतिक्रिया में देखने को मिला।

COVAXIN ट्रायल: भारत की वैज्ञानिक उपलब्धि में अहम भूमिका डॉ. राय भारत में COVID-19 वैक्सीन विकास के अग्रणी वैज्ञानिकों में शामिल रहे। AIIMS, नई दिल्ली में वे:

1. Phase-1, Phase-2 और Phase-3 क्लिनिकल ट्रायल
2. बूस्टर डोज़ ट्रायल
3. बच्चों में वैक्सीन की सुरक्षा और प्रभावशीलता अध्ययन
4. COVID नेज़ल वैक्सीन ट्रायल के Principal Investigator (PI) रहे हैं।

उनके नेतृत्व में हुए इन परीक्षणों ने COVAXIN वैक्सीन को वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित करने और समयबद्ध तरीके से आम जनता तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह उपलब्धि भारत के आत्मनिर्भर स्वास्थ्य तंत्र की दिशा में एक बड़ा कदम मानी जाती है।

एक नजर में प्रो. (डॉ.) संजय के. राय

1. 200+ शोध प्रकाशन
2. 50+ रिसर्च प्रोजेक्ट्स
3. WHO जर्नल के संपादक
4. NHM नीति निर्माण में सक्रिय भूमिका
5. COVAXIN ट्रायल के प्रमुख वैज्ञानिक
6. 10+ देशों में आमंत्रित व्याख्यान
7. ICMR और राष्ट्रीय कार्यक्रमों के विशेषज्ञ सदस्य
8. जन-जागरूकता और सामाजिक योगदान

डॉ. राय ने केवल शोध और नीति तक ही अपनी भूमिका सीमित नहीं रखी, बल्कि उन्होंने प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से आम जनता को जागरूक करने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया।

COVID-19 के दौरान उन्होंने —

1. वैक्सीन से जुड़े भ्रम दूर करने
2. वैज्ञानिक जानकारी को सरल भाषा में समझाने और
3. लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा उपायों के प्रति जागरूक करने

में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वैश्विक मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व डॉ. राय को विश्व के 10 से अधिक देशों में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जा चुका है। उनके विचार और शोध अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य नीतियों और रणनीतियों में भी प्रभाव डालते हैं।

निष्कर्ष:

एक समर्पित वैज्ञानिक, एक दूरदर्शी नीति-निर्माता अपने व्यापक शोध, नीति-निर्माण में सक्रिय सहभागिता और जन-स्वास्थ्य के प्रति समर्पण के कारण प्रो. (डॉ.) संजय के. राय आज भारत के उन चुनिंदा विशेषज्ञों में शामिल हैं, जिनके कार्य ने न केवल देश की स्वास्थ्य व्यवस्था को सुदृढ़ किया है, बल्कि भारत को वैश्विक स्वास्थ्य मानचित्र पर एक मजबूत पहचान भी दिलाई है।

उनकी यात्रा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा है और यह संदेश देती है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समर्पण और सेवा भाव के साथ किसी भी क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर पहचान बनाई जा सकती है।

- शेष प्रोफेसर्स अगले पृष्ठ पर

डॉ. अनिर्बान होम चौधरी: क्रिटिकल केयर मेडिसिन और चिकित्सा नवाचार के अग्रणी संवाहक

डॉ. अनिर्बान होम चौधरी वर्तमान में वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज (VMMC) और सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली में डाइरेक्टर प्रोफेसर एवं क्रिटिकल केयर मेडिसिन विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। MD, FICCM, PGDMLE और FIAMLE जैसी प्रतिष्ठित योग्यताओं के साथ, उन्हें नैदानिक देखभाल (Clinical Care), चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान में उनकी उत्कृष्टता के लिए व्यापक रूप से पहचाना जाता है।

अनुसंधान और अकादमिक योगदान

डॉ. चौधरी ने 95 से अधिक शोध प्रकाशन और पुस्तक अध्याय लिखे हैं, जो क्रिटिकल केयर के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाते हैं। वे 'इमेजिंग इन क्रिटिकल केयर मेडिसिन' और 'इंटरप्रिटेशन ऑफ लेबोरेटरी डायग्नोसिस इन इंटेंसिव केयर' जैसी प्रशंसित पुस्तकों के संपादक/लेखक हैं, जबकि उनकी आगामी कृति 'एंटीबायोटिक प्रिसिजन इन क्रिटिकल इलनेस' की चिकित्सा जगत में उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही है।

नवाचार और तकनीकी नेतृत्व

स्वास्थ्य सेवा में नवाचार के प्रबल समर्थक के रूप में, उनके पास 'डीप न्यूरल लर्निंग' का उपयोग करके 'स्वायत्त रोगी निगरानी प्रणाली' (Autonomous Patient Monitoring) के लिए ऑस्ट्रेलियाई सरकार द्वारा प्रदत्त पेटेंट है। यह क्रिटिकल केयर में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) को एकीकृत करने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

राष्ट्रीय भूमिका और सम्मान

उन्होंने राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (NMC), राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड और भारत के औषधि महानियंत्रक (DCGI) जैसे प्रमुख राष्ट्रीय निकायों में एक विशेषज्ञ सदस्य के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं। डॉ. चौधरी की उत्कृष्टता को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें ISCCM प्रेसिडेंशियल साइटेशन, सर्वपल्ली राधाकृष्णन विशिष्ट प्रोफेसर पुरस्कार (2021) और नेशनल हेल्थकेयर वेलनेस अवार्ड (2024) प्रमुख हैं।

नेतृत्व, नवाचार और समर्पण से परिभाषित अपने करियर के साथ, डॉ. चौधरी भारत में क्रिटिकल केयर मेडिसिन के भविष्य को आकार देने वाली एक प्रमुख हस्ती के रूप में खड़े हैं।

डॉ. चंद्र भूषण त्रिपाठी: बायोस्टैटिस्टिक्स और चिकित्सा अनुसंधान के प्रतिष्ठित ध्वजवाहक

डॉ. चंद्र भूषण त्रिपाठी एक प्रख्यात शिक्षाविद् हैं और वर्तमान में 'मानव व्यवहार एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान' (IHBAS), नई दिल्ली में बायोस्टैटिस्टिक्स (जैव सांख्यिकी) विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने प्रतिष्ठित बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU), वाराणसी से सांख्यिकी में एम.एससी. और बायोस्टैटिस्टिक्स में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है।

शैक्षणिक अनुभव और बहुविषयक विशेषज्ञता

25 वर्षों से अधिक के व्यापक शिक्षण अनुभव के साथ, डॉ. त्रिपाठी ने MBBS, MD, DM (न्यूरोलॉजी), M.Phil (क्लिनिकल साइकोलॉजी) और पी.एच.डी. जैसे विविध चिकित्सा संकायों में अपना अमूल्य योगदान दिया है। उनके अंतःविषय (Interdisciplinary) शिक्षण दृष्टिकोण ने स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में अनुसंधान क्षमताओं को वैश्विक स्तर पर मजबूती प्रदान की है।

अनुसंधान और वैश्विक पहचान

एक निपुण शोधकर्ता के रूप में, उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में 70 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। उन्होंने ICMR और DST द्वारा वित्तपोषित कई बहु-केंद्रित परियोजनाओं का नेतृत्व किया है और 30 से अधिक शोध ज्ञाताओं (Doctoral Theses) का मार्गदर्शन किया है। डॉ. त्रिपाठी की उत्कृष्टता को 2023 में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन द्वारा 'चिकित्सा गुरु सम्मान' और फ्रांस में 'इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर क्लिनिकल बायोस्टैटिस्टिक्स' द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है।

अंतरराष्ट्रीय सहभागिता और योगदान

डॉ. त्रिपाठी एक वैश्विक विद्वान हैं, जिन्हें अमेरिका, फ्रांस, दक्षिण अफ्रीका और श्रीलंका जैसे देशों में शैक्षणिक मंचों पर आमंत्रित किया गया है। वे अब तक 45 से अधिक विशेषज्ञ व्याख्यान दे चुके हैं। 'इंटरनेशनल स्टैटिस्टिकल इंस्टीट्यूट' जैसे वैश्विक निकायों में उनकी सक्रिय भूमिका भारत में साक्ष्य-आधारित स्वास्थ्य अनुसंधान (Evidence-based healthcare research) को आगे बढ़ाने के प्रति उनके अटूट समर्पण को दर्शाती है।

डॉ. रचना अग्रवाल: चिकित्सा शिक्षा एवं न्यूरोकेमिस्ट्री अनुसंधान की सशक्त हस्ताक्षर

डॉ. रचना अग्रवाल एक प्रतिष्ठित चिकित्सा शिक्षाविद् हैं और वर्तमान में 'मानव व्यवहार एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान' (IHBAS), नई दिल्ली में न्यूरोकेमिस्ट्री विभाग की प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज से MBBS और यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंस (UCMS) से मेडिकल बायोकैमिस्ट्री में MD की उपाधि प्राप्त की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने वॉन गोएथे मेडिकल कॉलेज, फ्रैंकफर्ट, जर्मनी से 'सेरेब्रल इस्किमिया' में मानद फेलोशिप के माध्यम से अपनी विशेषज्ञता को वैश्विक स्तर पर विस्तार दिया है।

शिक्षण और अकादमिक नेतृत्व

30 वर्षों से अधिक के समृद्ध शिक्षण अनुभव के साथ, डॉ. अग्रवाल ने MBBS, MD (मनोचिकित्सा), DM (न्यूरोलॉजी), M.Phil (क्लिनिकल साइकोलॉजी) और पी.एच.डी. जैसे विभिन्न विषयों के छात्रों का मार्गदर्शन किया है। चिकित्सा शिक्षा और अंतःविषय (Interdisciplinary) प्रशिक्षण के क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

अनुसंधान और नवाचार

एक सफल शोधकर्ता के रूप में, उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में 65 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं और प्रयोगशाला गुणवत्ता कार्यान्वयन (Laboratory Quality Implementation) व चिकित्सा शिक्षा पर चार पुस्तकें लिखी हैं। उनका शोध मुख्य रूप से अल्जाइमर और पार्किंसंस जैसे न्यूरोडीजेनेरेटिव विकारों के आनुवंशिक और जैव रासायनिक बायोमार्कर पर केंद्रित है।

गुणवत्ता मानक और नैदानिक योगदान

डॉ. अग्रवाल ने भारत भर में स्वास्थ्य संस्थानों के मूल्यांकन के लिए NABL के लिए लीड और टेक्निकल असेसर के रूप में प्रयोगशाला गुणवत्ता मानकों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने VMMC में बायोकैमिस्ट्री विभाग की सह-स्थापना की और IHBAS में उन्नत न्यूरोकेमिस्ट्री एवं इम्युनोएसे प्रयोगशालाओं को विकसित किया। उनका नेतृत्व आज भी न्यूरोसाइकिएट्रिक विकारों के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता वाले निदान (Diagnostics) और अनुसंधान को नई दिशा दे रहा है।

डॉ. उदय के. सिन्हा: भारत में नैदानिक मनोविज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य क्रांति के सूत्रधार

डॉ. उदय के. सिन्हा एक प्रख्यात मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ हैं, जो वर्तमान में 'मानव व्यवहार एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान' (IHBAS), दिल्ली में नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology) के एडिशनल प्रोफेसर के रूप में सेवारत हैं। मूल रूप से गया (बिहार) के निवासी, डॉ. सिन्हा ने मगध विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर और केंद्रीय मनोरोग संस्थान (CIP), रांची से पेशेवर प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने अपनी डॉक्टरेट की उपाधि देश के प्रतिष्ठित संस्थान NIMHANS, बेंगलुरु से अर्जित की है।

नैदानिक मनोविज्ञान में अग्रणी भूमिका

तीन दशकों से अधिक के अनुभव के साथ, डॉ. सिन्हा भारत और विदेशों में नैदानिक मनोविज्ञान के शिक्षण और प्रशिक्षण में एक अग्रणी नाम रहे हैं। उन्होंने न केवल IHBAS, दिल्ली में पेशेवर नैदानिक मनोविज्ञान कार्यक्रमों की स्थापना में मुख्य भूमिका निभाई, बल्कि उन्हें नेपाल के 'इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिन', काठमांडू में स्नातकोत्तर नैदानिक मनोविज्ञान कार्यक्रम शुरू करने का दुर्लभ गौरव भी प्राप्त है।

शिक्षण और शोध में अतुलनीय योगदान

डॉ. सिन्हा ने भारत और नेपाल में नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के 25 से अधिक बैचों का मार्गदर्शन किया है और 100 से अधिक शोध परियोजनाओं की देखरेख की है। उनके द्वारा विकसित 'मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन उपकरण' (Psychological Assessment Tools) पूरे भारत और एशिया में व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं। बाल और किशोर मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में उनके कार्यों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है।

जनसेवा और संकट प्रबंधन

कोविड-19 महामारी के दौरान, उन्होंने IHBAS में संकट परामर्श सेवाओं (Crisis Counseling Services) का नेतृत्व किया, जिससे हजारों लोगों को मानसिक संबल मिला। दिल्ली में 'मानसिक दिव्यांगता मूल्यांकन और प्रमाणन' (Mental Disability Assessment) के क्षेत्र में उनका कार्य आज सार्वजनिक सेवा और पेशेवर उत्कृष्टता का एक मानक बन चुका है।

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस को मिला टेक्नोलॉजी का बड़ा सहारा: 76 क्रेन और 125 नए स्पीड कैमरे

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस को मिला टेक्नोलॉजी का बड़ा सहारा: 76 क्रेन और 125 नए स्पीड कैमरे शुरू

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। राजधानी में ट्रैफिक व्यवस्था को अधिक सुगम और सुरक्षित बनाने के उद्देश्य से दिल्ली पुलिस ने एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए ट्रैफिक यूनिट में 76 नई क्रेनों को शामिल किया है। पुलिस मुख्यालय, जय सिंह रोड पर आयोजित कार्यक्रम में दिल्ली के पुलिस आयुक्त सतीश गोलछा (आईपीएस) ने इन क्रेनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि सड़कों पर अवैध पार्किंग और खराब वाहनों के कारण बढ़ती जाम की समस्या को देखते हुए यह कदम बेहद जरूरी था। नई क्रेनों के संचालन से ऐसे वाहनों को तेजी से हटाया जा सकेगा, जिससे यातायात सुचारू होगा और जाम की समस्या में कमी आएगी।

कार्यक्रम के दौरान पुलिस आयुक्त ने ओवर स्पीडिंग पर नियंत्रण के लिए 125 नए ओएसवीडी (Over-Speeding Violation Detection) कैमरों का भी सॉफ्ट लॉन्च किया। इन कैमरों के जरिए अब 76 अतिरिक्त सड़कों को कवर किया जाएगा, जिससे पहले से मौजूद नेटवर्क और मजबूत होगा। इस उन्नत प्रणाली के माध्यम से ओवरस्पीडिंग, लेन अनुशासन का उल्लंघन और गलत दिशा में वाहन चलाने जैसे मामलों की सटीक पहचान की जा सकेगी। यह व्यवस्था दोपहिया और तिपहिया वाहनों सहित सभी प्रकार के वाहनों पर लागू होगी।

इस मौके पर ट्रैफिक के विशेष आयुक्त नीरज ठाकुर सहित कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। अधिकारियों ने बताया कि यह पूरी पहल दिल्ली पुलिस की स्मार्ट पुलिसिंग नीति के तहत की गई है, जिसमें तकनीक के माध्यम से ट्रैफिक नियमों का पालन सुनिश्चित करने पर जोर दिया जा रहा है। कैमरों में हाई-रिज़ॉल्यूशन इमेजिंग, ऑटोमेटेड नंबर प्लेट रिकॉग्निशन (ANPR) और ई-चालान सिस्टम से सीधा जुड़ाव जैसी आधुनिक सुविधाएं शामिल हैं, जिससे नियम तोड़ने वाले वाहनों की पहचान कर समय पर चालान जारी किया जा सकेगा।

इस नई तकनीकी व्यवस्था से ट्रैफिक उल्लंघनों की निगरानी अब रियल-टाइम में संभव हो सकेगी। विशेष रूप से दुर्घटना संभावित क्षेत्रों और भीड़भाड़ वाले इलाकों में यह सिस्टम काफी कारगर साबित होगा। पुलिस का मानना है कि इससे सड़क दुर्घटनाओं में कमी आएगी और लोगों में ट्रैफिक नियमों के प्रति जागरूकता बढ़ेगी।कार्यक्रम के बाद पुलिस आयुक्त ने पुलिस मुख्यालय स्थित आदर्श ऑडिटोरियम में ट्रैफिक पुलिस कर्मियों के साथ 'सम्पर्क सभा' भी की, जिसमें करीब 450 कर्मियों ने भाग लिया। इस सभा का उद्देश्य कर्मचारियों को अपनी समस्याएं, सुझाव और कार्य से जुड़ी चुनौतियां साझा करने का मंच प्रदान करना था। इस दौरान अधिकारियों ने ट्रैफिक प्रबंधन को बेहतर बनाने के उपायों पर भी चर्चा की।अपने संबोधन में सतीश गोलछा ने कहा कि ट्रैफिक पुलिस दिल्ली पुलिस की सबसे अधिक दिखाई देने वाली इकाई है, इसलिए उनका कार्य पारदर्शी और प्रभावी होना चाहिए, जिससे जनता का विश्वास मजबूत हो। उन्होंने सड़क सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता बताते हुए दुर्घटना संभावित स्थानों की समीक्षा करने और सड़क इंजीनियरिंग तथा लोगों के व्यवहार से जुड़े पहलुओं पर विशेष ध्यान देने की बात कही।इस पहल के जरिए दिल्ली पुलिस ने स्पष्ट कर दिया है कि वह आधुनिक तकनीक और बेहतर संसाधनों के माध्यम से राजधानी में ट्रैफिक व्यवस्था को सुधारने और सड़क सुरक्षा को मजबूत करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

IGI एयरपोर्ट पर हड़कंप: विशाखापत्तनम से आ रहे इंडिगो विमान का हवा में इंजन फेल, पायलट की सूझबूझ से बचे 161 यात्री

विशाखापत्तनम से दिल्ली आ रहे इंडिगो के एक विमान का हवा में इंजन फेल हो गया, जिससे आईजीआई एयरपोर्ट पर हड़कंप मच गया। पायलट की सूझबूझ से विमान को सुरक्षित लैंड कराया गया और 161 लोगों की जान बचाई गई।

नई दिल्ली। इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय (आईजीआई) हवाई अड्डे पर शनिवार सुबह उस वक्त हड़कंप मच गया, जब विशाखापत्तनम से दिल्ली आ रहे इंडिगो के एक विमान का हवा में इंजन फेल होने की सूचना मिली। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए एयरपोर्ट पर फुल इमरजेंसी घोषित कर दी गई। गनीमत यह रही कि पायलट की सूझबूझ और सटीक तालमेल से विमान को सुरक्षित लैंड करा लिया गया और एक बड़ा हादसा टल गया। जानकारी के अनुसार इंडिगो की फ्लाइट संख्या 6ई 579 (बोइंग 737) ने शनिवार सुबह 8:39 बजे विशाखापत्तनम (विजाग) से दिल्ली के लिए उड़ान भरी थी। यह विमान इंडिगो ने तुर्की की कोरेनडन एयरलाइंस से वेट-लीज पर लिया था। विमान में क्रू सदस्यों सहित कुल 161 लोग सवार थे। जब विमान बीच रास्ते में था, तभी पायलट को इंजन में तकनीकी खराबी और उसके ठप होने का संकेत मिला। पायलट ने तुरंत इमरजेंसी प्रोटोकॉल सक्रिय किए और एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) से प्रायोरिटी लैंडिंग (प्राथमिकता के आधार पर उतरने) का अनुरोध किया। एयरपोर्ट प्रबंझन से मिली ने बताया कि इमरजेंसी की सूचना मिलते ही पूरा एयरपोर्ट प्रशासन युद्धस्तर पर सक्रिय हो गया। सूचना के बाद सुबह 10:39 बजे एयरपोर्ट पर पूर्ण आपातकाल की घोषणा की गई। वहीं, एयरपोर्ट फायर विभाग को सुबह 10:54 बजे इसकी सूचना मिली, जिसके बाद दमकल की कई गाड़ियां और मेडिकल टीमें रनवे पर तैनात कर दी गईं। साथ ही किसी भी संभावित खतरे को देखते हुए रनवे नंबर 28 को विशेष रूप से हाई अलर्ट पर रखा गया था। विमान सुबह 10:59 बजे आईजीआई एयरपोर्ट पर सुरक्षित रूप से उतरा। लैंडिंग के बाद सभी यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाला गया।

नोएडा अंतरराष्ट्रीय विमान पत्तन का उद्घाटन: उत्तर प्रदेश के विकास की नई उड़ान

संगीता घोष

नई शुरुआत की उड़ान

भारत में इंफ्रास्ट्रक्चर की कहानी अब केवल सड़कों और पुलों तक सीमित नहीं रही। Narendra Modi द्वारा नोएडा अंतरराष्ट्रीय विमान पत्तन के पहले चरण का उद्घाटन इस बदलती तस्वीर का एक मजबूत उदाहरण है। करीब 11,200 करोड़ रुपये की लागत से बना यह एयरपोर्ट सिर्फ एक प्रोजेक्ट नहीं, बल्कि एक सोच का विस्तार है—जहां भारत खुद को वैश्विक स्तर पर और मजबूत बनाना चाहता है।

परियोजना का महत्व

Noida International Airport को भारत के सबसे बड़े ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट्स में गिना जा रहा है। यह केवल यात्रियों की सुविधा बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह क्षेत्रीय विकास, इंडस्ट्री और कनेक्टिविटी को एक साथ जोड़ने का माध्यम बन सकता है।

उत्तर प्रदेश की बदलती पहचान

एक समय पर पिछड़ेपन की छवि से जूझता उत्तर प्रदेश अब तेजी से खुद को एक नए रूप में पेश कर रहा है। प्रधानमंत्री के बयान के अनुसार, राज्य अब सबसे अधिक अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट्स वाले राज्यों में शामिल हो चुका है। मेरे नजरिए से यह बदलाव सिर्फ आंकड़ों का नहीं, बल्कि सोच और प्राथमिकताओं का बदलाव है।

विकास का नया इंजन

"एयरपोर्ट केवल सुविधा नहीं, प्रगति के केंद्र हैं"—यह बात सुनने में जितनी सरल लगती है, उतनी ही गहरी है। जब किसी क्षेत्र में एयर कनेक्टिविटी बढ़ती है, तो वहां व्यापार, पर्यटन और निवेश अपने आप आकर्षित होते हैं। इस एयरपोर्ट के साथ भी कुछ ऐसा ही होने की उम्मीद है।

विकसित भारत की ओर बढ़ते कदम

सरकार का लगातार इंफ्रास्ट्रक्चर पर जोर देना यह दिखाता है कि भारत अब भविष्य के लिए तैयारी कर रहा है। यह एयरपोर्ट दिल्ली-एनसीआर के बढ़ते दबाव को कम करेगा और एक नए अंतरराष्ट्रीय हब के रूप में उभर सकता है।

मुख्य बिंदु

* ₹11,200 करोड़ की लागत से विकसित
* भारत के बड़े ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट्स में शामिल
* उत्तर प्रदेश में अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट्स की संख्या में वृद्धि
* रोजगार और निवेश के अवसरों में बढ़ोतरी
* दिल्ली-एनसीआर के लिए वैकल्पिक एयर ट्रैफिक हब।

(इतना क्यों सिखाए जा रही हो जिंदगी,हमें कौन सा यहां सदियां गुजारनी है)

के.के. छाबड़ा, सर्व धर्म मंडल

(संसार में ऐसे बहुत से लोग हैं,जो सिर्फ अपनी खुशी के लिए किसी का भी इस्तेमाल कर सकते हैं.जब उनका अपना मतलब होता है,तो बहुत मीठे बन जाते हैं,लेकिन मतलब निकलते ही इस तरीके से आंखें फिर लेते हैं,जैसे उनका हम लोगों से कोई नाता ही ना हो.ऐसे लोग आखिर में जीवन में अकेले ही रह जाते हैं,लेकिन उनका घमंड कभी कम नहीं होता.वह सिर्फ अपने सुख के बारे में सोचते हैं,लेकिन जब कभी भी आप पर दुख की घड़ी आएगी,तो वह लोग कभी काम नहीं आते,लेकिन अगर उनको कोई तकलीफ हो जाए,तो आसमान सिर पर उठा लेते हैं और सारी जिंदगी दूसरों को कोसते रहते हैं,यह उन लोगों की फितरत होती है,ऐसे लोग विश्वास के पात्र नहीं होते.बहुत गहरी बातें मैंने लिखी हैं,क्योंकि कल कुछ ऐसी बातें मेरे अपने जीवन में घटी हैं. किसी ने सच कहा है(आप गैरों की बात करते हैं, हमने अपने भी आजमाए हैं,लोग कांटो से बच कर निकलते हैं,हमने फूलों से जख्म खाए हैं)मन बहुत व्याकुल है,इसलिए आज के लिए इतना ही.सभी को जय माता दी.)

(कुछ लोग आपके जीवन में ऐसे भी होते हैं,जो जानबूझकर ऐसे काम करते हैं,जिससे सामने वाले को दुख पहुंचे और जब सामने वाला उनकी कही गई बातों का जवाब देता है,तो उनको यह लगता है कि सामने वाला उनकी बेइज्जती कर रहा है.लेकिन ऐसे लोग जानबूझकर ऐसी बातें करते हैं,जिससे सामने वाला उनको पलट कर जवाब दें,क्योंकि ऐसे लोग अपनी खुद की इज्जत,खुद कम करवाते हैं.अगर आप दूसरे की इज्जत नहीं कर सकते,तो आपको कोई हक नहीं बैठता,कि आप दूसरे की बेइज्जती करो.इसलिए जो भी करो,सोच समझ कर करो.अगर आप सामने वाले की बेज्जती करोगे,तो वह एक हद तक चुप रहेगा,उसके बाद आपको भी बेज्जती को सहन करना होगा.अगर बेज्जती सहने की शक्ति रखते हो,तभी सामने वाले को कुछ गलत बोलो,नहीं तो जो सुन सकता है,वह सुना भी सकता है.यह संस्कार होते हैं,जो अपने से बड़ों के सामने उनको बोलने नहीं देते.लेकिन यह बात भी सच है,कि उम्र बढ़ने से इंसान को अकल नहीं आ जाती.इसलिए जब भी बोलो,सोच समझकर बोलो.अगर गलत बोलेंगे,तो आपकी खुद की इज्जत सुरक्षित नहीं हो सकती.यही सच है.आप क्या सोचते हैं,यह आप सोचें.क्या गलत है और क्या सही.जय माता दी.)

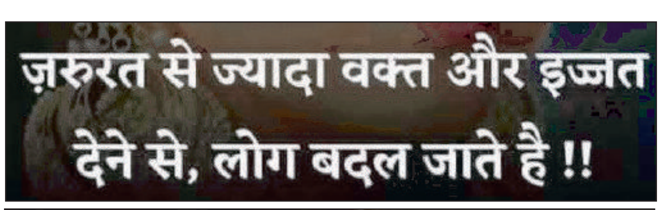

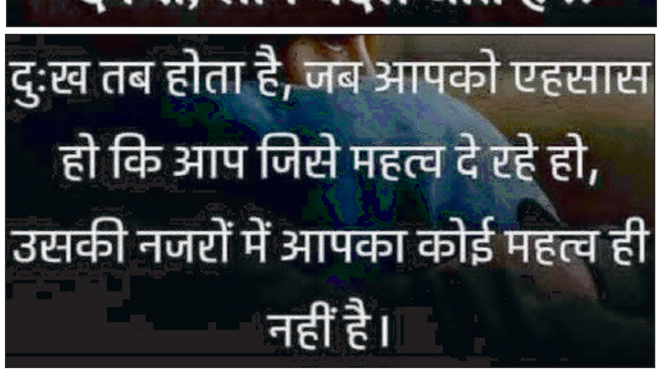

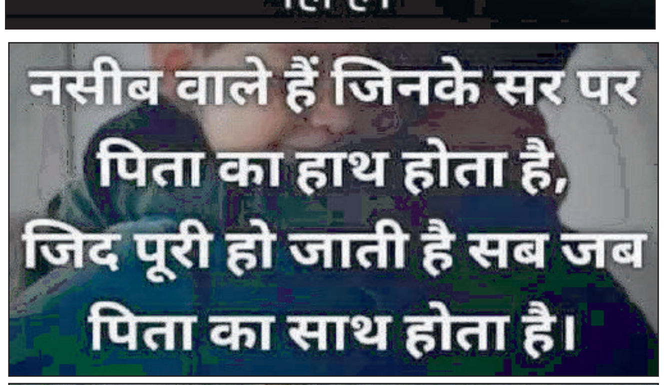

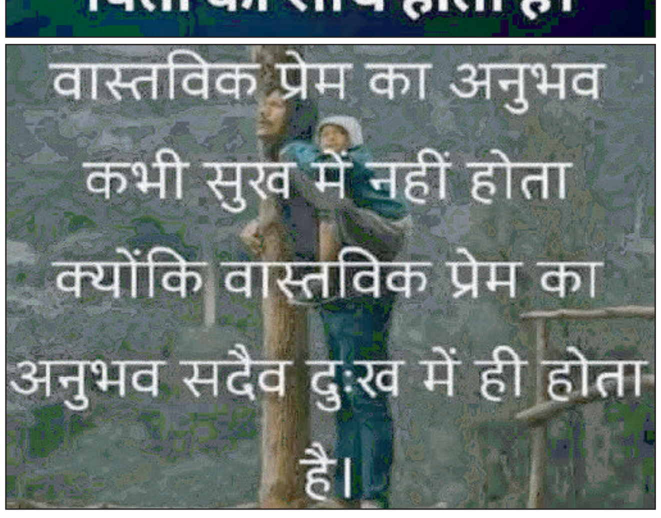

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html I tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

साइबर अपराध से अर्जित धनराशि अत्यधिक – प्रवर्तन निदेशालय (ED) के निष्कर्ष

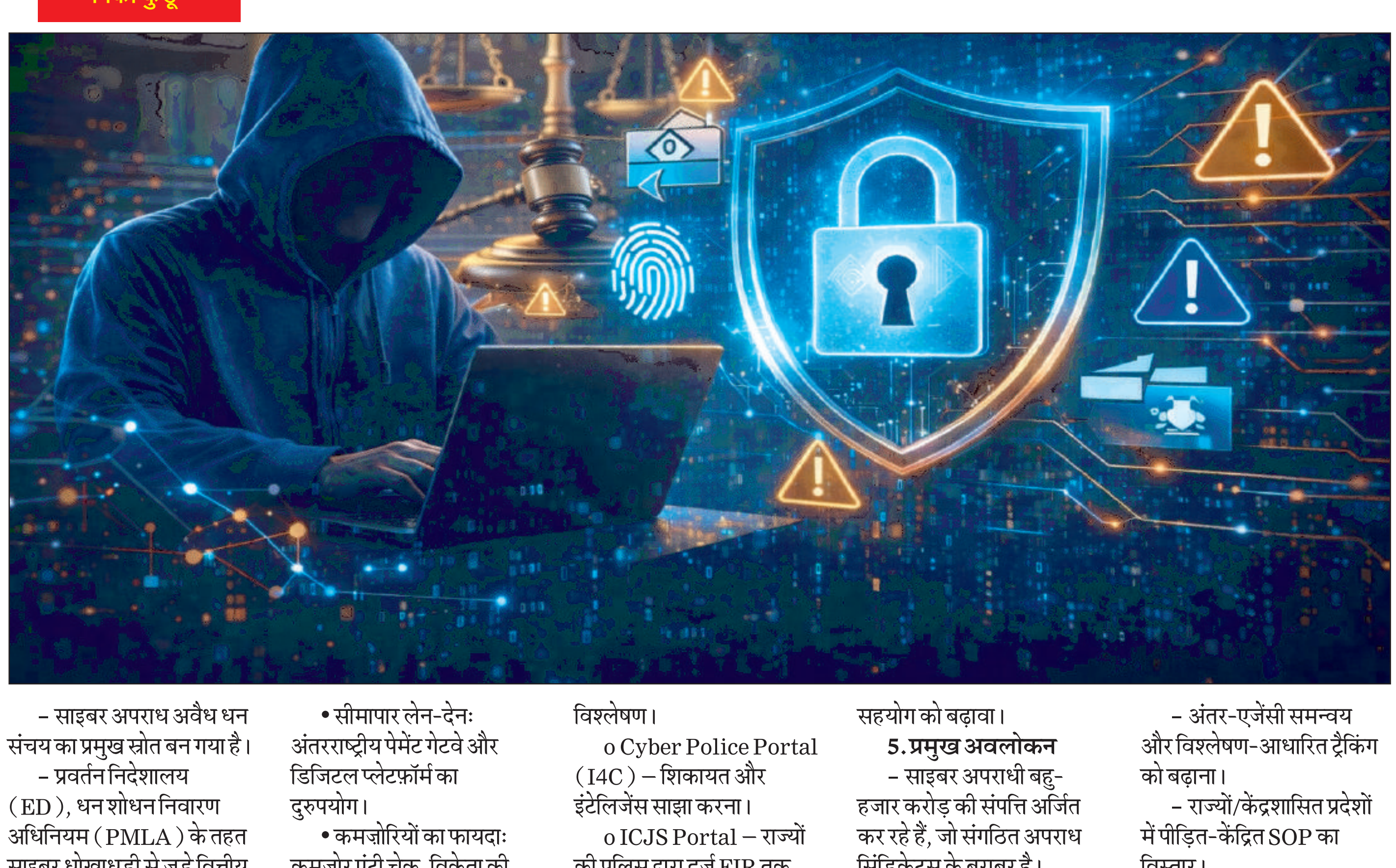

– साइबर अपराध अवैध धन संचय का प्रमुख स्रोत बन गया है।

– प्रवर्तन निदेशालय (ED), धन शोधन निवारण अधिनियम (PMLA) के तहत साइबर धोखाधड़ी से जुड़े वित्तीय लेन-देन की जांच करता है।

– 28 फरवरी 2026 तक, ED ने ₹35,925.58 करोड़ की अपराध से अर्जित संपत्ति 257 साइबर अपराध मामलों में चिन्हित की है।

साइबर अपराधियों द्वारा धन संचय के तरीके

• धोखाधड़ी लेन-देनः ऑनलाइन घोटाले, फ़िशिंग, नकली निवेश योजनाएँ।

• लेयरिंग और मनी लॉन्ड्रिंगः धन को कई खातों, शेल कंपनियों और क्रिप्टो वॉलेट्स से गुजारकर स्रोत छिपाना।

• सीमापार लेन-देनः अंतरराष्ट्रीय पेमेंट गेटवे और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का दुरुपयोग।

• कमज़ोरियों का फायदाः कमजोर एंट्री चेक, विक्रेता की खामियाँ और अपर्याप्त निगरानी।

ED का समन्वय और उपकरण

सूचना साझा करनाः

o कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ नोडल अधिकारियों के माध्यम से।

o धारा 66(2) PMLA के तहत संबंधित एजेंसियों को जानकारी देना।

– प्रमुख प्लेटफ़ॉर्मः

o SAHYOG – समन्वय तंत्र।

o Samanvaya – MIS, डेटा रिपॉजिटरी, अपराध लिंक विश्लेषण।

o Cyber Police Portal (I4C) – शिकायत और इंटेलिजेंस साझा करना।

o ICJS Portal – राज्यों की पुलिस द्वारा दर्ज FIR तक पहुँच।

सरकारी ढाँचा

– मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) – 2 जनवरी 2026 को जारीः

o पीड़ित-केंद्रित ढाँचा प्रदान करता है।

o राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (NCRP) और Citizen Financial Cyber Fraud Reporting & Management System (CFCFRMS) का उपयोग।

o केंद्र, राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के बीच सहयोग को बढ़ावा।

5. प्रमुख अवलोकन

– साइबर अपराधी बहु-हजार करोड़ की संपत्ति अर्जित कर रहे हैं, जो संगठित अपराध सिंडिकेट्स के बराबर है।

– ₹35,925.58 करोड़ की राशि डिजिटल वित्तीय प्रणाली की कमजोरियों को उजागर करती है।

• राज्यवार डेटा ED द्वारा संधारित नहीं है – स्थानीय खतरे के आकलन में चुनौती।

– Samanvaya और ICJS जैसे प्लेटफ़ॉर्म अंतरराज्यीय साइबर अपराध नेटवर्क जोड़ने में अहम।

आगे की राह

– संदिग्ध लेन-देन की रीयल-टाइम निगरानी को सुदृढ़ करना।

– अंतर-एजेंसी समन्वय और विश्लेषण-आधारित ट्रैकिंग को बढ़ाना।

– राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में पीड़ित-केंद्रित SOP का विस्तार।

साइबर अपराध से अर्जित धन का राज्यवार मानचित्रण विकसित करना।

जन-जागरूकता अभियान चलाना ताकि पीड़ितों की संख्या घटे।

✓ **निष्कर्षः** साइबर अपराधी डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र का दुरुपयोग कर अभूतपूर्व अवैध संपत्ति अर्जित कर रहे हैं। ED द्वारा लगभग ₹36,000 करोड़ की पहचान यह दर्शाती है कि तत्काल सुरक्षा उपायों, समन्वित प्रवर्तन और पीड़ित संरक्षण की आवश्यकता है।

बेरी मेले में श्रद्धालुओं के लिए लाभकारी साबित हुआ कानूनी हेल्प डेस्क

परिवहन विशेष न्यूज

जिला विधिक प्राधिकरण द्वारा बेरी स्थित माता भीमेश्वरी देवी मंदिर परिसर में स्थापित स्टाल पर 1245 श्रद्धालुओं ने ली योजनाओं की जानकारी

बेरी (झज्जर), 28 मार्च। धर्मनगरी बेरी में 19 मार्च से शुरू हुए माता भीमेश्वरी देवी नवरात्र मेले के दौरान प्रतिदिन असंख्य श्रद्धालुओं ने देवी माता के दर्शन किए और पूजा अर्चना की। इस दौरान मंदिर परिसर में उन्होंने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा स्थापित स्टाल पर कानूनी जानकारी ली।

उल्लेखनीय है कि जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री राजकुमार यादव के कुशल मार्गदर्शन और सीजेएम विशाल के निर्देश अनुसार आमजन को कानूनी रूप से जागरूक करने के उद्देश्य से मेला परिसर में हेल्प डेस्क स्थापित किया गया था। 19 मार्च से निरन्तर चालु हेल्प डेस्क पर 1245 श्रद्धालुओं ने कानूनी जागरूकता से जुड़ी जानकारी पीएलवी से हासिल की।

सीजेएम एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव विशाल ने बताया कि

इस हेल्प डेस्क के माध्यम से मेले में आने वाले श्रद्धालुओं और आम नागरिकों को विभिन्न कानूनी अधिकारों और योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

उन्होंने बताया कि इस स्टाल पर श्रद्धालुओं को विशेष रूप से राष्ट्रीय लोक अदालत, स्थायी लोक अदालत (परमानेंट लोक अदालत), सामुदायिक मध्यस्थता केंद्र, निःशुल्क कानूनी सहायता और अन्य विधिक सेवाओं के बारे में सरल भाषा में समझाया गया। इसका उद्देश्य यह है कि आमजन अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हों और किसी भी कानूनी समस्या का समाधान सरल और सुलभ तरीके से प्राप्त कर सकें।

वहीं मेले के दौरान पीएलवी अमला, बबीता और नीता देवी ने बताया कि प्रकार के प्रयास समाज में कानूनी साक्षरता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने श्रद्धालुओं से प्राधिकरण द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया है।

जिला में एलपीजी, पेट्रोल व डीजल की आपूर्ति सामान्य, अफवाहों से बचें डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जिलावासियों से किया आह्वान

परिवहन विशेष न्यूज

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जिलावासियों से किया आह्वान

झज्जर, 28 मार्च। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने जिलावासियों को आश्वस्त करते हुए कहा कि झज्जर जिले में एलपीजी, डीजल और पेट्रोल की आपूर्ति पूरी तरह सामान्य रूप से जारी है। जिले के विभिन्न क्षेत्रों में कुल 26 गैस एजेंसियां सुचारू रूप से कार्यरत हैं, जो निर्धारित नियमों के अनुसार उपभोक्ताओं को घरेलू गैस की आपूर्ति कर रही हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी प्रकार की कमी की स्थिति नहीं है, इसलिए नागरिक किसी भी तरह की अफवाहों पर ध्यान न दे

एलपीजी की जमाखोरी करने वालों पर प्रशासन की पैनी नजर

डीसी ने कहा कि प्रशासन स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए है और आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए हर स्तर पर निगरानी की जा रही है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि अफवाह फैलाने वाले, जमाखोरी करने वाले तथा कालाबाजारी में लिप्त व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। ऐसे तत्वों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा।

उन्होंने जिले के विभिन्न हिस्सों में कार्यरत प्रवासी श्रमिकों से भी विशेष अपील की है कि वे किसी प्रकार की अफवाह या भ्रम के कारण पलायन न करें। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन उनके साथ खड़ा है और उनकी हर समस्या का समाधान प्राथमिकता के आधार पर किया जाएगा। यदि किसी श्रमिक को एलपीजी की उपलब्धता या कार्य स्थल से जुड़ी किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना करना पड़ता है, तो वे तुरंत प्रशासन को सूचित करें।

पेट्रो पदार्थों से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए हेल्पलाइन नंबर पर करें संपर्क

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने आगे कहा कि यदि किसी भी जिलावासी या प्रवासी को एलपीजी, पेट्रोल या डीजल की आपूर्ति में किसी प्रकार की दिक्कत आती है, तो वे तुरंत जिला कंट्रोल रूम के टेलीफोन नंबर 01251-252516 पर संपर्क करें। यह सेवा सप्ताह के सभी सातों दिन सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक उपलब्ध रहेगी।

डीसी ने पुनः नागरिकों से सहयोग की अपील करते हुए कहा कि प्रशासन के साथ मिलकर ही ऐसी परिस्थितियों में व्यवस्था को सुचारू बनाए रखा जा सकता है।

क्या प्यार की भी कोई उम्र होती है?

जब युवा प्रेम करते हैं तो उसे जीवन का स्वाभाविक हिस्सा माना जाता है, लेकिन वही प्रेम यदि ढलती उम्र में जन्म ले तो समाज असहज क्यों हो उठता है? इस मानसिकता पर गंभीर विचार की जरूरत है।

अमरपाल सिंह वर्मा

इन दिनों अखबारों और सोशल मीडिया पर बाड़मेर के पूर्व सांसद मानवेन्द्र सिंह जसोल के पुनर्विवाह चर्चा हो रही है। एक वीडियो वायरल हुआ है जिसमें उनकी और उनकी मां के बीच तकरार सुनाई दे रही है और उसी को इस चर्चा से जोडक़र देखा जा रहा है। दो साल पहले उनकी पत्नी चित्रा सिंह का सडक़ हादसे में निधन हो गया था। उनके बेटे का विवाह भी हाल में हुआ है। सोशल मीडिया पर यह प्रचार हुआ है कि कि 62 वर्षीय मानवेन्द्र सिंह ने पुनर्विवाह कर लिया है। यह स्पष्ट नहीं है कि यह बात सच है या नहीं और सच कहूं तो इस बहस में पडऩा जरूरी भी नहीं है लेकिन इस पूरे शोर ने एक सवाल फिर से सामने ला खड़ा किया है कि क्या उम्रदराज लोगों को प्रेम करने या विवाह करने का अधिकार नहीं है?

हमारे समाज में प्रेम का स्वागत तब तक है जब तक वह युवावस्था में हो। युवाओं के प्रेम को कभी कहानी बना दिया जाता है, कभी कविता, कभी फिल्म लेकिन जैसे ही कोई व्यक्ति पचास या साठ वर्ष की उम्र पार कर लेता है, समाज उससे एक अलग तरह के आचरण की अपेक्षा करने लगता है। मान लिया जाता है कि अब उसके जीवन में प्रेम, साथ और विवाह जैसे भावनात्मक प्रश्नों की कोई जगह नहीं बची है। अब उससे कहा जाता है कि धार्मिक कर्मकांड में समय लगाओ, नाती-पोतों के साथ खेलो, और जीवन की शेष यात्रा शांत भाव से काटो। यह सलाह देखने में भले ही सहज लगे लेकिन इसके पीछे एक कठोर सामाजिक धारणा छिपी होती है कि एक उम्र के बाद इंसान की भावनाएं समाप्त हो जानी चाहिए। वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है। उम्र बढ़ती है लेकिन मनुष्य की भावनाएं समाप्त नहीं होतीं। जीवन के उत्तरार्ध में अक्सर परिस्थितियां ऐसी बन जाती हैं जब किसी साथी की जरूरत पहले से अधिक महसूस होती है। अनेक पुरुष ऐसे होते हैं जिनकी पत्नी का निधन हो चुका होता है। अनेक महिलाएं ऐसी होती हैं जिनके पति दुनिया में नहीं रहे। बच्चे अपने-अपने परिवारों में व्यस्त हो जाते हैं। घर भरा हुआ दिखाई देता है लेकिन ऐसे लोगों के भीतर एक गहरा खालीपन धीरे-धीरे जीवन का हिस्सा बन जाता है।

दुखद है कि समाज इस अकेलेपन को नहीं देखता लेकिन यदि वही व्यक्ति किसी के साथ जीवन बांटने की इच्छा प्रकट कर दे या विवाह करने का निर्णय ले ले तो समाज तुरंत असहज हो उठता है जैसे किसी सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन हो गया हो। मुझे पत्रकारिता के चार दशक के अनुभव में ऐसे अनेक प्रसंग देखने को मिले हैं जब ढलती उम्र में साथ तलाशने वाले लोगों को अनावश्यक सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ा। कुछ वर्षों पहले श्रीगंगानगर में एक घटना चर्चा में आई थी। अस्सी वर्ष के एक बुजुर्ग ने पचपन वर्ष की एक महिला से विवाह कर लिया। दोनों की मुलाकात एक बस यात्रा के दौरान हुई थी। बातचीत से शुरू हुआ परिचय धीरे-धीरे विश्वास में बदल गया और अंततः उन्होंने विवाह का निर्णय लिया लेकिन विवाह के बाद सबसे बड़ी चुनौती समाज और परिवार की प्रतिक्रिया थी। परिवार के कई सदस्यों को यह स्वीकार करना कठिन लगा कि इस उम्र में भी कोई नया संबंध शुरू कर सकता है। सवाल यह नहीं था कि दोनों वयस्क हैं या नहीं बल्कि यह था कि इस उम्र में ऐसा क्यों?

मुझे क्राइम बीट की रिपोर्टिंग के दौरान पुलिस थानों में भी कई बार ऐसी घटनाएं सुनने को मिलती थीं जब उम्रदराज विधुर किसी परिचित महिला के साथ बैठे हुए मिल जाते थे और इसे सनसनीखेज घटना की तरह पेश किया जाता था। कई बार उन्हें सार्वजनिक रूप से अपमानित भी होना पड़ता था। दरअसल समस्या प्रेम नहीं है, समस्या हमारी सामाजिक सोच है। हमने मान लिया है कि प्रेम केवल युवाओं का अधिकार है। जबकि सच्चाई यह है कि जीवन के उत्तरार्ध का प्रेम कई बार युवावस्था के प्रेम से अधिक शांत और सच्चा होता है। उसमें न जल्दबाजी होती है, न प्रदर्शन। उसमें केवल साथ की इच्छा होती है। दिल चाहता है कि कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसके साथ फुरसत के समय दो बातें की जा सकें, शाम की चाय साझा की जा सके और यह महसूस हो सके कि जीवन अभी पूरी तरह खाली नहीं हुआ है।

विडंबना यह है कि हम फिल्मों और साहित्य में बुजुर्गों की प्रेम कहानियों पर भावुक हो जाते हैं लेकिन अपने आसपास ऐसा कुछ घटित होते ही नैतिकता के पहरेदार बन जाते हैं। शायद समय आ गया है कि हम इस विषय पर थोड़ा ठहरकर सोचें। जीवन की शाम केवल अंधेरा नहीं होती। कई बार उसी समय आकाश सबसे सुंदर रंगों से भर जाता है। प्रेम उम्र की सीमाओं में कैद नहीं होता। वह तब भी जन्म ले सकता है जब जीवन की दोपहर बीत चुकी हो और शाम उतर रही हो। शायद सच यही है कि कभी-कभी सबसे खूबसूरत सूरज वही होता है जो ढलने से ठीक पहले सबसे ज्यादा चमकता है। उम्रदराज लोगों की प्रेम भावनाओं को भी इसी तरह देखा जाना चाहिए।(

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

डिजिटल आत्मघातः गाड़ी चलाते समय मोबाइल का उपयोग कहीं आपका मृत्यु आदेश तो नहीं

आज का समय ऐसा है जहाँ आदमी सड़क पर कम और स्क्रीन पर ज्यादा चलता दिखाई देता है। हाथ में स्टीयरिंग होता है, लेकिन ध्यान जेब में रखे उस छोटे से यंत्र में उलझा रहता है। यह केवल एक आदत नहीं, बल्कि धीरे-धीरे फैलता हुआ एक ऐसा संकट है, जो चुपचाप जीवन निगल रहा है। न कोई चेतावनी, न कोई आवाज, बस एक क्षण की चूक और सब कुछ समाप्त।

गाड़ी चलाते समय जब फोन बजता है, तो मन में एक अजीब सी बेचैनी उठती है। लगता है जैसे अभी नहीं उठाया तो कोई बड़ा काम छूट जाएगा। पर सच यह है कि उस एक क्षण में आप अपने जीवन के सबसे बड़े जोखिम को आमंत्रित कर रहे होते हैं। मस्तिष्क एक समय में केवल एक ही कार्य को पूरी तरह कर सकता है, बाकी सब केवल भ्रम है। आप समझते हैं कि आप दोनों काम साथ कर रहे हैं, पर वास्तव में आप दोनों में से कोई भी काम ठीक से नहीं कर पा रहे होते।

जब चालक का ध्यान सड़क से हटता है, तो केवल आंखें ही नहीं, उसका निर्णय लेने की क्षमता भी कमजोर हो जाती है। सामने से आती गाड़ी, अचानक ब्रेक लगाता वाहन, सड़क पार करता व्यक्ति—ये सब दृश्य आंखों के सामने होते हुए भी दिमाग तक सही समय पर नहीं पहुँचते। यही वह क्षण होता है, जहाँ दुर्घटना जन्म लेती है।

समस्या केवल हाथ में फोन पकड़ने की नहीं है। कई लोग यह सोचकर संतुष्ट हो जाते हैं कि बिना हाथ लगाए बात कर लेना सुरक्षित है। पर सच्चाई यह है कि खतरा हाथों से नहीं, दिमाग से पैदा होता है। जब आप बातचीत में उलझे होते हैं, तो आपका मन सड़क से दूर किसी और दुनिया में चला जाता है। यह एक अदृश्य परदा है, जो आंखों के सामने होते हुए भी आपको अंधा बना देता है।

सड़क पर होने वाली दुर्घटनाओं के पीछे यह लापरवाही तेजी से बढ़ती हुई वजह बन चुकी है। एक क्षण का ध्यान भटकना, एक संदेश पढ़ने की कोशिश, या एक कॉल का जवाब—ये सब मिलकर जीवन की सबसे बड़ी भूल बन सकते हैं। यह केवल आपकी जान का सवाल नहीं है, बल्कि उन लोगों का भी, जो आपके साथ सड़क पर चल रहे हैं।

जरा सोचिए, घर पर कोई आपका इंतजार कर रहा है। दरवाजे पर खड़ी वह उम्मीद, वह मुस्कान, वह अपनापन—क्या वह एक कॉल से छोटा है? क्या एक संदेश इतना जरूरी है कि उसके लिए आप अपने और अपने अपनों के जीवन को दांव पर लगा दें? सड़क पर बिखरे कांच के टुकड़े और मुड़ी हुई गाड़ियाँ यही गवाही देती हैं कि उस आखिरी कॉल ने कितनी कहानियों को अधूरा छोड़ दिया।

अब समय आ गया है कि हम इस आदत को केवल गलती न समझें, बल्कि अपराध के रूप में देखें। गाड़ी चलाते समय फोन का उपयोग करना केवल लापरवाही नहीं, बल्कि एक चलती हुई आपदा है। कानून से बचना संभव हो सकता है, पर प्रकृति के नियमों से नहीं। गति और समय का गणित किसी को माफ नहीं करता।

समाधान बहुत कठिन नहीं है, बस इरादे की जरूरत है। गाड़ी में बैठते ही फोन को एक तरफ रख दें। यह स्वीकार करें कि कोई भी बात इतनी जरूरी नहीं है, जो आपकी जान से बड़ी हो। यदि कोई साथ बैठा है, तो उसकी भी जिम्मेदारी बनती है कि वह चालक को सावधान करे। यहाँ चुप रहना समझदारी नहीं, बल्कि जोखिम को बढ़ावा देना है।

तकनीक ने हमें जोड़ने का काम किया है, लेकिन हम उसे अपने जीवन से बड़ा बना बैठे हैं। जरूरत इस बात की है कि हम तकनीक का उपयोग करें, न कि उसके गुलाम बनें। अगली बार जब गाड़ी चलाते समय आपका फोन बजे, तो उसे एक चेतावनी की तरह सुनें, न कि अवसर की तरह।

फैसला आपके हाथ में है। स्टीयरिंग को संभालना है या अपने जीवन की दिशा को खो देना है। यदि सच में अपने और अपने अपनों की चिंता है, तो आज से ही अपने वाहन को मोबाइल मुक्त क्षेत्र बनाने का संकल्प लें। यही संकल्प आपको सुरक्षित घर तक पहुंचाएगा और कई अनजानी जिंदगियों को भी बचाएगा।

अजय कुमार बियानी
सेवानिवृत्त अभियंता एवं स्वतंत्र लेखक

31 मार्च महावीर जयंती पर विशेष : अहिंसा प्रशिक्षण से ही स्वस्थ समाज का निर्माण संभव

डा. वीरेन्द्र भाटी मंगल

भगवान महावीर के सिद्धांत आज वैज्ञानिक दृष्टि से सर्वमान्य हो चुके हैं। महावीर द्वारा बताये गये अहिंसक मार्ग पर चलने से स्वस्थ, समृद्ध एवं सुखी समाज का निर्माण संभव है। मानव समाज के विकास के लिए शांति आवश्यक है। सभी वर्गों के परस्पर विकास से अनेक समस्याओं का समाधान संभव है। महावीर की दृष्टि में अभाव और अत्यधिक उपलब्धता दोनों ही हानिकारक हैं। भगवान् महावीर की शिक्षाओं से पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का असंतुलन, युद्ध, आतंकवाद, हिंसा, धार्मिक असहिष्णुता व गरीबों के आर्थिक शोषण जैसी समस्याओं के समाधान प्राप्त किये जा सकते हैं। भगवान् महावीर ने छब्बीस सौ वर्ष पूर्व वैज्ञानिक रूप में एक ऐसी अहिंसक जीवन शैली जीने की शिक्षा दी, जिससे स्वस्थ समाज की संरचना का साकार रूप सामने आया। सही मायने में स्वस्थ समाज की स्थापना के लिए अहिंसा का प्रशिक्षण की ही सर्वमान्य है।

गांधी का दर्शन कहता है, हमें पशु से भिन्न करने में एकमात्र अहिंसा ही है। व्यक्ति हिंसक है, तो फिर वह पशु के समान है। मनुष्य होने या बनने के लिए व्यक्ति में अहिंसा का भाव होना आवश्यक है।

गांधी कहते है कि हमारा समाजवाद अथवा साम्यवाद अहिंसा पर आधारित होना चाहिए जिसमें मालिक-मजदूर एवं जमींदार-किसान के मध्य परस्पर सद्भावपूर्ण व्यवहार हो। निःशस्त्र अहिंसा की शक्ति किसी भी परिस्थिति में सशस्त्र शक्ति से श्रेष्ठ ही होगी। व्यक्ति को जीवन में बहादुरी, निर्भीकता, स्पष्टता, सत्यनिष्ठा का इस हद तक विकास कर लेना कि तीर-तलवार उसके आगे तुच्छ जान पड़ें, यही अहिंसा की साधना है। शरीर की नश्वरता को समझते हुए, उसके न रहने का अवसर आने पर विचलित न होना ही अहिंसा है। मन, वचन और कर्म से किसी की हिंसा न करना अहिंसा कहा जाता है। यहाँ तक कि वाणी भी कठोर नहीं होनी चाहिए। फिर भी अहिंसा का इससे कहीं ज्यादा गहरा अर्थ है।

आज के दौर में शांतिप्रिय इंसान भी कहने लगा है कि अहिंसा अब सिर्फ उपदेश की चीज बन गई है। उसमें न तो किसी की आस्था है और न उससे किसी परिवर्तन की उम्मीद की जा सकती है। इस सवाल और सोच में समस्याओं से पलायन की प्रवृत्ति छिपी है। इसमें बुद्ध, महावीर और गांधी के सिद्धांतों पर अविश्वास की छाया भी है, जिन्होंने न केवल अहिंसा को अपना जीवन बनाया था, बल्कि प्रयोगों से साबित भी कर दिया था, कि अहिंसा एक सकारात्मक ताकत का नाम है। कुछ वर्षों पहले जैन संत आचार्य तुलसी ने इस अवधारणा को जन्म दिया था कि अगर हिंसा का प्रशिक्षण दिया जा सकता है, तो अहिंसा का क्यों नहीं? दरअसल हिंसा के लिए हमारा मस्तिष्क बहुत प्रशिक्षित है, इस आधार पर यह मान्यता स्थापित कर दी गई है कि हिंसा समस्या का समाधान है जबकि अहिंसा प्रशिक्षण से व्यक्ति के मानस को बदला जा सकता है।

वर्तमान दौर में लोगों का चिंतन इस ओर विकसित हो रहा है कि हिंसा के बिना कुछ नहीं हो सकता, न कोई सुनता है। आज सरकारों से मांगे मनवाने के लिए भी लोग हिंसा का सहारा लेते हैं तो वहीं सरकारे भी इस स्थिति से निपटने के लिए पुलिस से लाठी-गोली चलाने के लिए मजबूर दिखती हैं, यानी हिंसा एक हथियार है जो अहिंसा को मात देने में लगा है। दार्शनिक आचार्य महाप्रज्ञ कहते है कि अहिंसा में हमारी आस्था तो है, मगर उसमें गहराई नहीं है। इसलिए जरूरत इस बात की है कि अहिंसा में आस्था जगाने वाले प्रशिक्षण की व्यवस्था हो। जैसे पुलिस और सेना की जमात खड़ी की जा रही है, वैसे ही अहिंसक सैनिकों की जमात भी खड़ी की जाए, तभी अहिंसा की चेतना को जन-जन में प्रसारित किया जा सकता है। महाप्रज्ञ कहते है कि हिंसक ताकतों का सामने करने के लिएअहिंसक व्यक्तित्व, अहिंसा प्रशिक्षणके माध्यम से तैयार कर ही इन समस्याओं से निजात पायी जा सकती है।

मन-वचन-काया से किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख न हो। जब यह सिद्धांत हमारे निश्चय और जागृति में दृढ़ हो जाएगा, तभी हमअहिंसा के पालक बन सकते हैं। अहिंसा यात्रा के प्रणेता तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता आचार्य महाश्रमण का मानना है कि शांति केवल अहिंसा से ही संभव है पर अहिंसा का अर्थ इतना ही नहीं है कि किसी जीव की हत्या न की जाये. दूसरों को पीड़ा न पंहुचाना, उनके अधिकारों का हनन करना भी अहिंसा है। इस अहिंसा की पहले भी आवश्यकता थी और आज भी है पर आज विनाशक शस्त्रों के अंबार लगे हुए हैं. गरीबी एवं अभाव के कारण लोग नारकीय जीवन जीने के लिए विवश हैं। सैनिक छावनियों में लाखों-लाख सैनिक प्रतिदिन युद्धाभ्यास करते हैं. हिंसा की इतनी सूक्ष्म जानकारी और प्रशिक्षण दी जा रही है कि वर्षों तक यह क्रम चलता रहता है। हर वर्ष उसकी नयी-नयी तकनीक खोजी जाती है। नये-नये आधुनिक हथियार, नये-नये टैंक सामने आ रहे है। हिंसा के प्रशिक्षण के लिए प्रचार-प्रसार पर मुट्ठी भर निहित स्वार्थी शक्तियों द्वारा अकूत संसाधन लगाये जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में मन में एक विकल्प उठता है कि इतनी ट्रैनिंग दी जाती है, तो क्या अहिंसा प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है?

निश्चय ही आवश्यकता तो है, पर सवाल यह है कि उसे पूरा कैसे किया जाये? क्या केवल धर्मशास्त्रों के पढ़ने मात्र से अहिंसा जीवन में उतर आयेगी? क्या केवल प्रवचन सुनने मात्र से अहिंसा का जीवन में अवतरण हो जायेगा? नहीं। उसके लिए हमें अहिंसा के प्रशिक्षण पर विचार करना होगा। यह सोचना होगा कि हिंसा के क्या कारण हैं, तथा कैसे उनका निवारण किया जा सकता है। हिंसा के दो कारण हैं-आंतरिक एवं बाहरी।

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

अंक ज्योतिष राजयोग

4–5–6, 2–5–8 और 9–5–1 : शक्ति संयोजनों और उनके वास्तविक जीवन प्रभाव

डॉ. पूजाप्रसुन एन
गोल्ड मेडलिस्ट
Shivoham Shastr
shivohamshastr.com
09599101326, 07303855446

उन्नत अंक ज्योतिष में, राजयोग एक अकेली संख्या नहीं है—यह संख्याओं का एक सामंजस्यपूर्ण संयोजन है, जो जब संतुलित होता है, तो अधिकार, सफलता, प्रभाव और भौतिक उन्नति प्रदान करता है।

कई संयोजनों में से, तीन विशेष रूप से शक्तिशाली हैं और अक्सर अत्यधिक सफल व्यक्तियों में देखे जाते हैं:

4–5–6, 2–5–8, और 9–5–1

ये संयोजन इसलिए काम करते हैं क्योंकि ये पूरक ऊर्जाओं का मिश्रण हैं, जो रणनीति, क्रियान्वयन, आकर्षण और भाग्य के बीच संतुलन बनाते हैं।

"5" (केंद्रीय उत्प्रेरक) की भूमिका को समझना:

एक महत्वपूर्ण बात ध्यान दें:

इन सभी संयोजनों में संख्या 5 (बुध) शामिल है

क्यों?

क्योंकि 5 है:

संयोजक (Connector)

संचारक (Communicator)

अनुकूलनशील बुद्धि (Adaptable Intelligence)

यह एक सेतु (Bridge) की तरह कार्य करता है, जो विभिन्न ऊर्जाओं को वास्तविक जीवन में सुचारू रूप से कार्य करने में मदद करता है।

5 के बिना, कई शक्तिशाली संख्याएँ निष्क्रिय या अप्रकट रह जाती हैं।

1. राजयोग संयोजन:

4 – 5 – 6

सम्मिलित ऊर्जाएँ:

4 → अपरंपरागत सोच, सिस्टम, रणनीति

5 → बुद्धिमत्ता, व्यापार, संचार

6 → विलासिता, प्रसिद्धि, आकर्षण.

इस राजयोग का मूल स्वभाव:

यह एक "आधुनिक सफलता राजयोग" है.

यह संयोजन करता है:

नवाचार (4)

क्रियान्वयन (5)

आकर्षण एवं परिणाम (6)

परिणामः भौतिक सफलता + सार्वजनिक पहचान.

मानसिक पैटर्न:

अलग सोचता है (4)

समझदारी से कार्य करता है (5)

सुंदर प्रस्तुति करता है (6)

करियर संकेत:

मजबूत है:

व्यवसाय और उद्यमिता

मीडिया, ब्रांडिंग, फिल्म

तकनीक + रचनात्मक क्षेत्र

विलासिता उद्योग.

धन पैटर्न:

विचारों के माध्यम से तेज वृद्धि

नेटवर्क और प्रस्तुति से लाभ

गैर-पारंपरिक तरीकों से धन

चुनौतियाँ:

अत्यधिक भौतिकवाद

जोखिम लेने की प्रवृत्ति

संबंधों में अस्थिरता

अंतिम अंतर्दृष्टि:

4–5–6 राजयोग = "विचार → क्रियान्वयन → प्रसिद्धि → धन"

2. राजयोग संयोजन:

2 – 5 – 8

सम्मिलित ऊर्जाएँ:

2 → भावनाएँ, अंतर्ज्ञान, जनसंपर्क

5 → संचार, बुद्धिमत्ता

8 → अनुशासन, कर्म, संरचना

विशेष तत्व अंतर्दृष्टिः पृथ्वी तत्व राजयोगः

यह संयोजन पृथ्वी तत्व (पृथ्वी तत्त्व) से गहराई से जुड़ा हुआ है

क्योंकिः

2 (चंद्र) भूमि और वातावरण के प्रति संवेदनशीलता देता है

5 (बुध) गणना, सौदे और लेन-देन को नियंत्रित करता है

8 (शनि) भूमि, संपत्ति, खनिज और भौतिक संसाधनों का कारक है.

इस राजयोग का मूल स्वभावः

यह एक "जन प्रभाव + पृथ्वी धन राजयोग" है.

परिणामः लोगों पर प्रभाव + भूमि आधारित संपत्ति के माध्यम से स्थिरता.

रियल एस्टेट और भूमि लाभ:

यह राजयोग विशेष रूप से शक्तिशाली हैः

रियल एस्टेट व्यवसाय

प्रॉपर्टी डीलिंग और ब्रोकरेज

निर्माण और इंफ्रास्ट्रक्चर

भूमि निवेश और दीर्घकालिक संपत्ति.

ऐसे लोग अक्सर:

संपत्ति संचय से धन अर्जित करते हैं

समय के साथ भूमि मूल्य वृद्धि से लाभ उठाते हैं

त्वरित धन के बजाय संपत्ति निर्माण करते हैं.

मानसिक पैटर्न:

लोगों को समझता है (2)

अच्छा संचार करता है (5)

धैर्यपूर्वक कार्य करता है (8)

करियर संकेत:

मजबूत है:

रियल एस्टेट और निर्माण

सरकार / प्रशासन

कॉर्पोरेट नेतृत्व

दीर्घकालिक व्यवसाय

धन पैटर्न:

धीमी लेकिन अत्यंत स्थिर वृद्धि

35–40 वर्ष के बाद बड़ा उन्नति

भूमि और संरचना के माध्यम से धन

चुनौतियाँ:

भावनात्मक दबाव

सफलता में देरी

भारी जिम्मेदारियाँ

अंतिम अंतर्दृष्टि:

2–5–8 राजयोग = "लोग → संरचना → भूमि → विरासत"

यह संपत्ति निर्माताओं का पृथ्वी तत्व राजयोग है.

3. राजयोग संयोजन:

9 – 5 – 1

सम्मिलित ऊर्जाएँ:

9 → ऊर्जा, साहस, क्रिया

5 → बुद्धिमत्ता, रणनीति

1 → अधिकार, नेतृत्व

इस राजयोग का मूल स्वभावः

यह एक "राजा का राजयोग" है

परिणामः नेतृत्व + प्रभुत्व + पहचान.

मानसिक पैटर्नः

साहसिक कार्य करता है (9)

तीव्र सोच (5)

स्वाभाविक अधिकार (1)

करियर संकेत:

मजबूत हैः

नेतृत्व भूमिकाएँ

सेना / पुलिस

खेल

उद्यमिता

धन पैटर्न:

क्रिया के माध्यम से तेज उन्नति

नेतृत्व निर्णयों से लाभ.

चुनौतियाँ:

अहंकार टकराव

आवेगशीलता

आक्रामकता

अंतिम अंतर्दृष्टि:

9–5–1 राजयोग = "क्रिया → रणनीति → अधिकार → विजय".

तुलनात्मक समझ:

तीनों राजयोग सफलता के अलग-अलग मार्ग दर्शाते हैं, जिनकी अपनी प्रकृति, शक्ति और परिणाम की गति होती हैः

4–5–6 राजयोग एक रचनात्मक और भौतिक मार्ग को दर्शाता है। यह प्रसिद्धि और धन से जुड़ा है और विशेष रूप से आधुनिक, व्यवसायिक या रचनात्मक क्षेत्रों में तेज परिणाम देता है।

2–5–8 राजयोग एक पृथ्वी और संरचनात्मक मार्ग को दर्शाता है। इसकी शक्ति भूमि, संपत्ति और दीर्घकालिक स्थिरता में होती है। यह संयोजन धीरे काम करता है, लेकिन इसके परिणाम गहरे, शक्तिशाली और स्थायी होते हैं।

9–5–1 राजयोग एक क्रिया-आधारित और नेतृत्व केंद्रित मार्ग को दर्शाता है। यह अधिकार, पहचान और विजय प्रदान करता है, और इसके परिणाम तेज और तीव्र होते हैं।

अंतिम निष्कर्ष:

ये राजयोग सफलता के विभिन्न मार्ग प्रस्तुत करते हैं:

4–5–6 → आधुनिक धन, पहचान और विलासिता

2–5–8 → भूमि, संपत्ति, विरासत और स्थिरता (पृथ्वी तत्व राजयोग)

9–5–1 → नेतृत्व, प्रभुत्व और उपलब्धि

अंतिम सत्य:

अंक ज्योतिष में राजयोग भाग्य नहीं है—

यह ऊर्जा, व्यवहार और दिशा का संतुलन है।

जब ये संयोजन सक्रिय होते हैं:

वैदिक ज्योतिष में दिशा शूल और उसके उपाय

पं योगेश पौराणिक
ज्योतिषाचार्य (इंजी)

वैदिक ज्योतिष में दिशा शूल एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो सप्ताह के विशिष्ट दिनों में यात्रा के लिए अशुभ मानी जाने वाली कुछ दिशाओं को इंगित करती है । पंचांग देखकर यह निर्धारित किया जा सकता है कि किसी विशेष दिन किस दिशा में यात्रा करने से बचना चाहिए और यदि यात्रा करना आवश्यक हो तो उसके लिए कुछ उपाय करके यात्रा की जा सकती है।

आइए चार्ट के माध्यम से जानते है किस दिन किस दिशा की यात्रा करना वर्जित है।

दिशा शूल के निवारण हेतु कुछ उपाय है जिसके उपयोग करने के पश्चात जरूरी यात्राएं दिशा शूल होने पर भी कर सकते हैं।

सर्वप्रथम यात्रा शुरू करने से पहले हनुमान जी और गणेश जी के दर्शन करके यात्रा आरम्भ करें। इसके पश्चात दिन के अनुसार निम्नलिखित वस्तुओं का उपयोग कर दिशा शूल का निवारण कर सकते हैं।

दिशा	वर्जित दिन
पूर्व	सोमवार और शनिवार
उत्तर पूर्व (ईशान)	बुधवार, शुक्रवार
उत्तर	बुधवार, मंगलवार
उत्तर पश्चिम	मंगलवार
पश्चिम	रविवार, शुक्रवार
दक्षिण पश्चिम	रविवार, शुक्रवार
दक्षिण	गुरुवार
दक्षिण पूर्व	सोमवार,गुरुवार

सोमवार	दूध पीकर
मंगलवार	गुड़ खाकर
बुधवार	तिल,धनिया
गुरुवार	दही खाकर
शुक्रवार	जौ या राई
शनिवार	अदरक, उड़द की दाल
रविवार	पान या घी

क्या एपस्टीन फाइल दबाने हेतु ट्रंप ने युद्ध का दांव खेला

सौरभ वार्ष्णेय

अमेरिका की राजनीति में षड्यंत्र, आरोप और रणनीतिक शोर कोई नई बात नहीं है।हाल के समय में यह सवाल बार-बार उठाया जा रहा है कि डोनाल्ड ट्रंप ने कथित एपस्टीन फाइल के दबाव से ध्यान हटाने के लिए युद्ध या युद्ध जैसे माहौल का सहारा लिया? यह सवाल जितना सनसनीखेज है, उतना ही जटिल भी। सोचने वाली बात यह है कि डोनाल्ड ट्रंप व्यवसायी भी है और अब दूसरी बार के अमेरिकी राष्टपति भी जो कि बहुत बड़ी बात है। ट्रंप अब मजे हुए खिलाड़ी है। उन्हें मालूम है कि विरोधी के सुर कैसे बंद करने हैं।ऐसे में जब ईरान कुछ कह रहा है और अमेरिका के राष्ट्रपति कुछ और.

अमेरिका के राष्ट्रपति बार -बार मीडिया के सामने आकर बयान पर बयान दिये जा रहे हैं कि अब ईरान से बात हो रही है जबकि पत्रकार के पूछने पर कि ईरान के किस व्यक्ति से बात हो रही है तो ट्रंप सवाल पर टालते हुए आगे दूसरी बात करते हैं।इससे साफ जाहिर होता है डोनाल्ड ट्रंप इस जंग में फंस चुके हैं। उन्हें अब इससे बाहर निकलने का रास्ता नहीं दिख रहा ।इसलिए वह बार-बार युद्धविराम का सहारा ले रहे हैं जबकि इससे पूरा विश्व त्रस्त हो चुका है।कई देशों में तो इमरजेंसी हालात बन चुके हैं।

सबसे पहले समझना होगा कि एपस्टीन फाइल से आशय उन दस्तावेजों और संपर्कों से है जो जैफरी क्या एपस्टीन से जुड़े थे—एक ऐसा नाम जो वैश्विक प्रभावशाली लोगों के नेटवर्क और गंभीर अपराधों के आरोपों के कारण चर्चा में रहा।इन फाइलों को लेकर समय-समय पर कई दावे और अटकलें सामने आती रही हैं, लेकिन ठोस और सार्वजनिक रूप से प्रमाणित तथ्य सीमित ही हैं।यह धारणा कि किसी नेता ने घरेलू विवादों से ध्यान हटाने के लिए बाहरी संघर्ष को हवा दी, अंतरराष्ट्रीय राजनीति में पहले भी चर्चा का विषय रही है। इसे डायवर्जनरी वॉर थ्योरी कहा जाता है लेकिन इस सिद्धांत को हर घटना पर लागू करना उचित नहीं होता। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के संदर्भ में भी, उनके कार्यकाल और उसके बाद की राजनीति में कई बार आक्रामक बयानबाजी और सैन्य तनाव देखने को मिला मगर यह कहना कि किसी विशेष फाइल को दबाने के लिए जानबूझकर युद्ध का दांव खेला गया, इसका कोई ठोस, प्रमाणित साक्ष्य सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है।

आज के दौर में सोशल मीडिया और वैचारिक ध्रुवीकरण के कारण अधूरी जानकारी तेजी से ₹सत्य₹ का रूप ले लेती है। एपस्टीन फाइल जैसे संवेदनशील विषय पर कई तरह के दावे राजनीतिक एजेंडा के तहत भी फैलाए जाते हैं।यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि किसी भी बड़े सैन्य या कूटनीतिक निर्णय के पीछे अनेक कारक होते हैं—रणनीतिक हित, सहयोगी देशों का दबाव, सुरक्षा चिंताएं, और वैश्विक शक्ति संतुलन। इन्हें केवल एक व्यक्तिगत या कानूनी विवाद से जोड़ देना अक्सर सरलीकरण होता है।एपस्टीन फाइल एक गंभीर और जांच का विषय है लेकिन इसे किसी संभावित युद्ध रणनीति से सीधे जोडने के लिए पर्याप्त प्रमाण नहीं हैं। लोकतंत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही जरूरी है, परंतु निष्कर्ष तथ्यों के आधार पर ही निकलने चाहिए, न कि अटकलों पर।जनता और मीडिया दोनों की जिम्मेदारी है कि वे सनसनी से ऊपर उठकर सत्य की खोज करें—क्योंकि लोकतंत्र में शोर नहीं, बल्कि प्रमाण ही सबसे बड़ा आधार होता है।बार-बार युद्धविराम से बेहतर है कि युद्ध ही विराम हो जाए। आज की वैश्विक राजनीति एक अजीब विरोधाभास से गुजर रही है। एक ओर युद्ध छिड़ते हैं, निर्दोष लोग मारे जाते हैं, शहर खंडहर बनते हैं; दूसरी ओर, कुछ दिनों या हफ्तों के ₹युद्धविराम₹ का दिखावटी मरहम लगाया जाता है। यह प्रश्न अब गंभीरता से उठने लगा है—क्या बार-बार के अस्थायी युद्धविराम वास्तव में समाधान हैं, या वे सिर्फ युद्ध को लंबा खींचने का साधन बन चुके हैं? युद्धविराम का मूल उद्देश्य होता है हिंसा को रोककर शांति की दिशा में ठोस पहल करना लेकिन जब यह केवल रणनीतिक विराम बनकर रह जाए—जहां पक्ष अपनी सैन्य ताकत बढ़ाने, पुनर्गठन करने और अगली आक्रामक कार्रवाई की तैयारी करते हैं तो यह शांति नहीं, बल्कि एक छलावा बन जाता है।

जब सरकार व्हाइट पेपर जारी कर रही है, तब पुलिस स्टेशन में चोरी की आशंका सामने आई है

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वरः आज कांग्रेस भवन में ओडिशा विधानसभा में जारी व्हाइट पेपर के आंकड़ों के आधार पर राज्य में कानून-व्यवस्था की खराब हालत पर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस हुई। प्रेस कॉन्फ्रेंस में सीनियर प्रवक्ता मिनोरानी दास और डॉ. मनीषा दास पटनायक ने कहा कि दो दिन पहले राज्य सरकार ने ओडिशा विधानसभा में पेश व्हाइट पेपर में माना था कि 2024 के मुकाबले 2025 में क्राइम रेट 7.3% बढ़ गया है, जो अब सरकार की नाकामी को साफ दिखाता है। कुल 2,29,881 केस दर्ज हुए हैं, जो 2024 से ज़्यादा हैं। यह विपक्ष का आरोप नहीं, बल्कि सरकार का अपना डेटा है। मर्डर 1,304 (हर दिन करीब 4), रेप 2,994, चोरी 21,192 (19% की बढ़ोतरी), लूट 1,802 और रॉबरी 353 के मामले यह साफ करते हैं कि राज्य में क्राइम बेकाबू होकर बढ़ रहा है। इससे भी ज़्यादा चिंता की बात इन्वेस्टिगेशन की कमज़ोरी है - मर्डर केस में सिर्फ़ 46% और लूट-डकैती केस में सिर्फ़ 25-30% चार्जशीट। यह ₹डबल इंजन₹ नहीं है - डबल क्राइम, ट्रिपल फेलियर। कांग्रेस स्पोक्सपर्सन डॉ. मनीसा दास पटनायक ने सरकार की नाकाबिलियत, दोहरी पॉलिसी और गैर-ज़िम्मेदारी की तीखी आलोचना की। उन्होंने कहा कि इस राज्य में कानून-व्यवस्था की कमी और बेशर्म सरकार है। उन्होंने कुछ गंभीर सवाल उठाए और कहा कि पुरी जिले के ब्रह्मगिरी इलाके में हुई एक दुखद घटना में, जहां एक नाबालिग को कथित तौर पर एक प्रभावशाली भाजपा नेता के रिश्तेदार ने प्रताड़ित किया, जो कानून के तहत दंडनीय अपराध, बाल शोषण और मानवाधिकारों का उल्लंघन है, ब्रह्मगिरी विधायक जिया, पुरी सांसद और पुरी एसपी की चुप्पी बहुत चिंताजनक है। उन्होंने पूछा कि क्या वे कानून से अनजान हैं या इसके बारे में सुनने के बाद चुप हैं। यह चुप्पी साबित करती है कि प्रभावशाली लोगों को बचाया जा रहा है और न्याय को दबाया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि जब महिला एवं बाल विकास विभाग के प्रभारी उपमुख्यमंत्री के परिवार के सदस्य भी साइबर क्राइम का शिकार होते हैं, तो आम महिलाएं और नाबालिग लड़कियां सुरक्षा की उम्मीद कैसे कर सकती हैं? नहीं, भारतीय जनता पार्टी ऐसी अश्लीलता को संस्कार मानती है, उन्होंने कहा। दुर्भाग्यपूर्ण SCB

महिलाओं पर अत्याचार और गुमशुदगी : कानून से आगे समाज की जिम्मेदारी

पूजा काउंसलिंग
साइकोलॉजिस्ट
(सोशल वर्कर)

भारत जैसे प्रगतिशील और लोकतांत्रिक देश में महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान का प्रश्न आज भी एक गंभीर सामाजिक चुनौती बना हुआ है। एक ओर देश डिजिटल विकास, आर्थिक प्रगति और आधुनिकता की ओर तेजी से बढ़ रहा है, वहीं दूसरी ओर महिलाओं पर अत्याचार, हिंसा और गुमशुदगी की घटनाएँ समाज को चिंतित करती हैं। यह विडंबना है कि कठोर कानून बनने के बावजूद इन अपराधों में पूरी तरह कमी नहीं आ पाई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज की सोच, प्रशासन की जिम्मेदारी और सामूहिक जागरूकता भी उतनी ही आवश्यक है।

भारत में महिलाओं की सुरक्षा के लिए कई महत्वपूर्ण कानून बनाए गए हैं। विशेष रूप से 2012 की 2012 Delhi gang rape case के बाद सरकार ने Criminal Law (Amendment) Act, 2013 को लागू किया, जिसमें महिलाओं के खिलाफ अपराधों के लिए कड़ी सज़ाओं का प्रावधान किया गया। इसके अतिरिक्त Protection of Women from Domestic Violence Act, 2005 जैसे कानून भी महिलाओं को घरेलू हिंसा से सुरक्षा प्रदान करते हैं। इन कानूनों का उद्देश्य महिलाओं को न्याय दिलाना और अपराधियों को कठोर दंड देना है।

हालाँकि, कानून बनने के बावजूद कई बार इनका प्रभावी क्रियान्वयन नहीं हो पाता। कई मामलों में पीड़ित महिलाओं को थाने में शिकायत दर्ज कराने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी पुलिस की उदासीनता, सामाजिक दबाव या परिवार की बदनामी के डर से महिलाएँ शिकायत दर्ज नहीं करा पातीं। इसके अलावा न्यायिक प्रक्रिया की धीमी गति भी एक बड़ी समस्या है। वर्षों तक मुकदमे चलने से पीड़ितों को न्याय मिलने में देरी होती है और अपराधियों में कानून का डर कम हो जाता है।

महिलाओं पर अत्याचार की समस्या का एक महत्वपूर्ण कारण

समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक मानसिकता भी है। कई स्थानों पर आज भी महिलाओं को पुरुषों से कमतर समझा जाता है। उन्हें परिवार और समाज में बराबरी का अधिकार नहीं दिया जाता। यही सोच कभी-कभी हिंसा और शोषण का रूप ले लेती है। कुछ मामलों में पीड़िता को ही दोषी ठहराया जाता है, जिससे वह न्याय के लिए आगे आने से डरती है। इसलिए आवश्यक है कि समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान और समानता की भावना को बढ़ावा दिया जाए।

महिलाओं की गुमशुदगी भी एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। कई बार इसके पीछे मानव तस्करी, जबरन विवाह, घरेलू हिंसा या आर्थिक मजबूरी जैसे कारण होते हैं। कुछ मामलों में महिलाओं को धोखे से नौकरी या विवाह का लालच देकर दूसरे स्थानों पर ले जाया जाता है। ऐसे मामलों में समय पर कार्रवाई और प्रभावी जांच की आवश्यकता होती है। पुलिस और प्रशासन को गुमशुदगी के मामलों को गंभीरता से लेना चाहिए और आधुनिक तकनीक तथा डेटा सिस्टम की मदद से खोज अभियान को तेज करना चाहिए।

महिलाओं की सुरक्षा में प्रशासन और पुलिस की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक थाने में महिला हेल्प डेस्क, त्वरित शिकायत दर्ज करने की व्यवस्था और संवेदनशील पुलिस प्रशिक्षण आवश्यक है। साथ ही महिला हेल्पलाइन और सुरक्षा ऐप जैसी सुविधाएँ भी महिलाओं को आपात स्थिति में सहायता प्रदान कर सकती हैं।

इसके साथ-साथ शिक्षा और जागरूकता भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। स्कूल और कॉलेज स्तर पर छात्रों को लैंगिक समानता, सम्मान और संवेदनशीलता की शिक्षा दी जानी चाहिए। लड़कियों को आत्मरक्षा प्रशिक्षण और डिजिटल सुरक्षा के बारे में जानकारी देना भी आवश्यक है। जब समाज में बचपन से ही समानता और सम्मान की भावना विकसित होगी, तभी महिलाओं के प्रति अपराधों में वास्तविक कमी आएगी।

समाज की भी इसमें बड़ी भूमिका है। परिवार को अपनी बेटियों को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाना चाहिए। लोगों को यह समझना होगा कि महिलाओं की सुरक्षा केवल महिलाओं का ही नहीं बल्कि पूरे समाज का दायित्व है। यदि समाज में कोई भी व्यक्ति किसी महिला के साथ अन्याय होते हुए देखता है, तो उसे इसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिए।

अंततः यह कहा जा सकता है कि महिलाओं पर अत्याचार और गुमशुदगी की समस्या केवल कानून से समाप्त नहीं होगी। इसके लिए समाज की मानसिकता में परिवर्तन, प्रशासन की सक्रियता और जागरूक नागरिकों की भागीदारी आवश्यक है। जब समाज महिलाओं को समान अधिकार और सम्मान देगा, तभी एक सुरक्षित और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण संभव होगा।

महिलाओं की सुरक्षा केवल एक सामाजिक आवश्यकता ही नहीं, बल्कि राष्ट्र की प्रगति और सभ्यता का महत्वपूर्ण आधार भी है। इसलिए हमें मिलकर ऐसा वातावरण बनाना होगा जहाँ हर महिला बिना भय के सम्मान और स्वतंत्रता के साथ अपना जीवन जी सके।

सफलता की दौड़ में बुनियादी शिक्षा का पतन

● विजय गर्ग

आज का समय प्रतिस्पर्धा का समय है। हर विद्यार्थी, हर अभिभावक और हर संस्थान एक ही लक्ष्य की ओर भाग रहा है—सफलता। लेकिन इस अंधी दौड़ में एक महत्वपूर्ण प्रश्न धीरे-धीरे पीछे छूटता जा रहा है: क्या हम वास्तव में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, या केवल परीक्षा पास करने की कला सीख रहे हैं?

प्रतिस्पर्धा का बढ़ता दबाव

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में प्रतियोगी परीक्षाओं का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। डॉक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक अधिकारी बनने की चाह में विद्यार्थी बहुत कम उम्र से ही कोचिंग और टेस्ट सीरीज के जाल में फंस जाते हैं।

इस दबाव के कारण वे विषयों को समझने के बजाय केवल अंकों और रैंक पर ध्यान केंद्रित करने लगते हैं।

बुनियादी शिक्षा की उपेक्षा

बुनियादी शिक्षा का अर्थ है—पढ़ने, समझने, सोचने और सवाल पूछने की क्षमता विकसित करना।

लेकिन आज:

विद्यार्थी रटने की प्रवृत्ति के शिकार हो रहे हैं

गणित, भाषा और विज्ञान की मूल अवधारणाएँ कमजोर रह जाती हैं

जिज्ञासा और रचनात्मकता कम होती जा रही है

जब नींव ही कमजोर होगी, तो ऊंची इमारत कितने समय तक टिक पाएगी?

कोचिंग संस्कृति का प्रभाव

कोचिंग संस्थानों का बढ़ता प्रभाव शिक्षा को एक व्यवसाय बना रहा है। यहाँ पढ़ाई का उद्देश्य ज्ञान नहीं, बल्कि परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करना होता है।

नतीजतन:

विद्यार्थी स्कूल की पढ़ाई को हल्के में लेने लगते हैं

अवधारणात्मक समझ के बजाय शॉर्टकट्स और ट्रिक्स पर निर्भरता बढ़ती है

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य खो जाता है

मानसिक और भावनात्मक प्रभाव

सफलता की इस दौड़ का असर केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं है। यह विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है:

तनाव और चिंता में वृद्धि

असफलता का डर

आत्मविश्वास में कमी

कई बार विद्यार्थी अपनी रुचियों और प्रतिभा को पहचान ही नहीं पाते, क्योंकि वे केवल एक तय रास्ते पर चलने को मजबूर होते हैं।

शिक्षा का बदलता उद्देश्य

शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है—नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक।

लेकिन आज शिक्षा का अर्थ केवल नौकरी प्राप्त करना रह गया है। इस सोच ने शिक्षा को सीमित और संकीर्ण बना दिया है।

समाधान की दिशा

इस समस्या का समाधान केवल व्यवस्था में बदलाव से नहीं, बल्कि सोच में परिवर्तन से भी संभव है:

अवधारणात्मक शिक्षा पर जोर दिया जाए स्कूलों में सीखने को रोचक और प्रयोगात्मक बनाया जाए

अभिभावक बच्चों पर अनावश्यक दबाव न डालें

विद्यार्थियों को अपनी रुचियों के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर मिले

निष्कर्ष

सफलता की दौड़ में शामिल होना गलत नहीं है, लेकिन यदि इस दौड़ में हम अपनी बुनियादी शिक्षा को खो दें, तो यह सफलता अधूरी रह जाती है।

हमें यह समझना होगा कि मजबूत नींव ही स्थायी सफलता की कुंजी है।

यदि शिक्षा को फिर से उसके मूल उद्देश्य—ज्ञान और विकास—की ओर मोड़ा जाए, तभी हम एक सशक्त और संतुलित समाज का निर्माण कर पाएंगे।

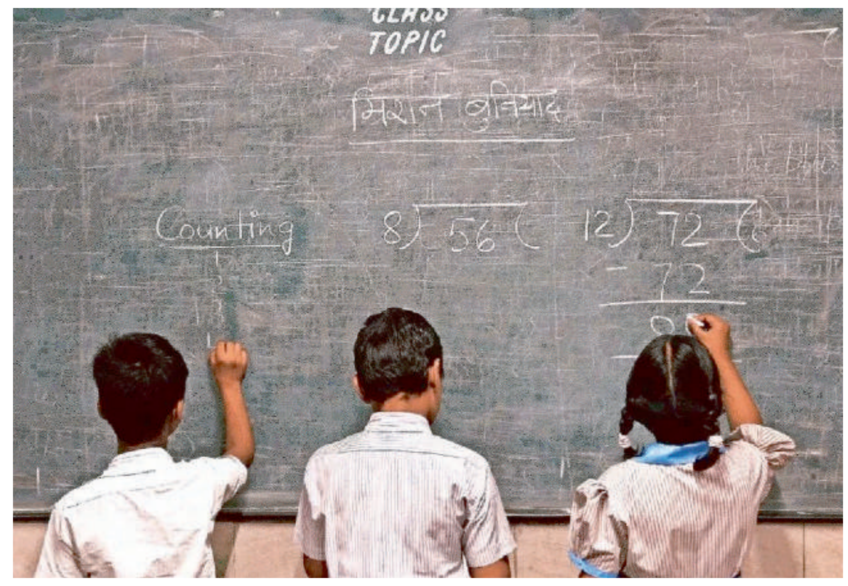

पश्चिम एशिया पर संसद में मोदी : बोले तो खूब, मगर कहा कुछ नहीं

(आलेख : बादल सरोज)

पूरी दुनिया को चिंतित और स्तब्ध कर देने वाले युद्ध –जिसे युद्ध कहना भी सही नहीं है, जो दुनिया के दो सबसे बनैले भेड़ियों इजरायल और अमरीका का विश्व शान्ति, सभ्य समाज की अब तक की अवधारणा तथा मनुष्यता को चीन्थने के लिए झपटना है – के चौथे सप्ताह में पहुँच जाने के बाद अंततः भारत के प्रधानमंत्री ने इस मसले पर अपना मौन तोड़ा और 24 मार्च को राज्य सभा में उन्होंने भारत सरकार का रुख रखा। यह पहली बार था, जब संसद या कहीं भी बोलते हुए उन्होंने न हाथ घुमाए, न भंगिमाएं दिखाईं, न ताने तिश्ने मारे, न वक्तृत्व कला दिखाई : आवाज में बिना किसी आरोह-अवरोह के, झुकी-झुकी नजरों से कोई 1889 शब्द के वक्तव्य को वे पढ़ भी गए, सुना भी गए – देश जाम वकफ बैठा ही रहा, वे फैला भी गए, लुढ़का भी गए। अपने भाषणों की दीर्घता के हिसाब से तो कम ही बोले, मगर जितना भी बोले, उसमें कहा कुछ नहीं।

इस भाषण में 'हमें हर चुनौती के लिए तैयार रहना होगा। सरकार सतर्क है, तत्पर है और पूरी गंभीरता से रणनीति बना रही है, हर निर्णय ले रही है। देश की जनता का हित हमारे लिए सर्वोपरि है।', जैसी लफ्फाजियों की भरमार थी। 'अब तक 3 लाख 75 हज़ार से अधिक भारतीयों के सुरक्षित भारत लौट आने और बीते कुछ दिनों में दुनिया के अनेक देशों से कच्चा तेल और एलपीजी से भरे जहाज भारत आने के बावजूद पेट्रोल, डीजल, गैस और फर्टिलाइजर जैसे जरूरी सामान के रूटीन सप्लाई प्रभावित होने, गल्फ देशों में करीब एक करोड़ भारतीय रहने की आदि की सूचनाएं थीं व उनके जीवन और आजीविका की सुरक्षा और होर्मुज स्ट्रेट में फंसे जहाज़ों और उनमें बहुत बड़ी संख्या में भारतीय क्रू मेंबर्स को लेकर चिंतायें थीं। पश्चिम एशिया के ज्यादातर देशों के राष्ट्राध्यक्षों के साथ दो राउंड फोन पर बात करने, खाड़ी के सभी देशों सहित ईरान, इजरायल और अमेरिका के साथ संपर्क में होने की जानकारियाँ थीं। डायलॉग और डिप्लोमेसी के माध्यम से इस समस्या के समाधान की सदाबहार बातें थीं और युद्ध किसी के भी हित में नहीं है, जैसे जुमले थे। क्रूड ऑयल के पर्याप्त स्टोरेज के और निरंतर सप्लाई की व्यवस्था, मेड इन इंडिया जहाज और अपनी जरूरत के अधिकांश हथियार भारत में ही बनाने, इकोनॉमी के फंडामेंटल्स मजबूत होने, पल-पल बदलते हालात पर नजर रखने, शॉर्ट टर्म, मीडियम टर्म और लॉन्ग टर्म ऐसे हर प्रभाव के लिए रणनीति होने तथा बुवाई के सीजन में किसानों को पर्याप्त खाद मुहैया कराने जैसे खुद की पीठ खुद ही थपथपाने की थोथे चने की तरह घणी बजती आत्मप्रवंचनाएं थीं। गैर जिम्मेदारी साक्षात थी : जिसे वे स्वयं अत्यंत गंभीर स्थिति मान रहे थे और जनता पर उसके असर को लेकर खुद को चिंतित बता रहे थे, उनसे निबटने की जिम्मेदारियां प्रदेश सरकारों पर डाल रहे थे। राज्यों से कह रहे थे कि वे पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना का लाभ समय पर मिलता रहे, यह सुनिश्चित करे। प्रवासी मजदूरों की परेशानियों को दूर करने के लिए प्रोएक्टिव कदम उठाए जाएं। वैश्विक संकट के समाधान का दायित्व निबाहने के लिए राज्य सरकारों का आव्हान कर रहे थे।

गरज यह कि इतनी देर के बाद दिए गए भाषण में वह सब कुछ था, जिसके न होने से भी काम निकल सकता था और ठीक वही नहीं था, जिसकी इस वक़्त सबसे अधिक आवश्यकता थी। सारे अंतर्राष्ट्रीय कानूनों, संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व जनमत की भावना के विरुद्ध, भारत के सदियों पुराने परंपरागत मित्र देश ईरान पर बिना किसी वजह के ट्रम्प के अमरीका और नेतन्याहू के इजरायल द्वारा किये गए हमले के विरुद्ध एक शब्द तक नहीं था। भारत के सर्वकालिक मित्र देश ईरान के सर्वोच्च नेता खामनेई की निर्मम तरीके से की गयी हत्या पर एक शब्द तक नहीं था : उन्हें श्रद्धांजलि तो दूर की बात रही, उनकी मौत तक का उल्लेख नहीं था। हमले की शुरुआत 165 स्कूली बच्चियों के जिस नृशंस नरसंहार से की गयी थी, उस पर दिखावटी टिप्पणी तक नहीं थी।

यह ऐसा प्रवचन था, जिसमें मौजूदा विश्व की सबसे बड़ी पीड़ा गज़ा के नरसंहार, वेनेजुएला के साथ की गयी उद्दंडता, दुनिया को फिर से गुलाम बनाने की सार्वजनिक रूप से की घोषित मंशाओं, देशों की सम्प्रभुताओ को कुचल कर उनके नेताओं की हत्याओं के खुलेआम किये जाने वाले एलानों के बारे में आपति या भर्त्सना तो छोडिये, असहमति और अप्रसन्नता तक नहीं जताई गयी थी। युद्ध के बारे में जो भी ढीला-पोला कहा गया, वह भी या तो ईरान, इजरायल और अमरीका को एक साथ एक ही पलड़े में रखकर कहा गया या फिर इस तरह कहा गया कि ईरान को ही दोषी ठहराया जा सके। इसमें भी सावधानी बरती गयी थी कि कहीं रंगा-बिल्ला नाराज न हो जायें। "कमर्शियल जहाजों पर हमला और होर्मुज स्ट्रेट जैसे अंतर्राष्ट्रीय जल मार्ग में रुकावट अस्वीकार्य है" की बात तो कही, मगर इसकी जरूरत क्यों आन पड़ी, इस पर कुछ नहीं बोले। यहाँ तक कि भारत के मेहमान बनकर लौट रहे ईरान के तीन जहाज़ों पर भारत की सीमा में ही हमला करने की अमरीका की सरासर भारत का अपमान करने वाली कार्यवाही के बारे में भी कुछ नहीं कहा। उलटे 'भारत ने नागरिकों पर, सिविल इंफ्रास्ट्रक्चर पर, एनर्जी और ट्रांसपोर्ट से जुड़े इंफ्रास्ट्रक्चर पर हमलों का विरोध' कहते हुए खाड़ी देशो में अमरीकी सैनिक अड्डों पर ईरान द्वारा की जा रही प्रतिरोध कार्यवाही की मुखालफत कर दी। क्या यही वह संदेश था, जिसे वे 'भारत की संसद के इस उच्च सदन से शांति और संवाद की एकजुट आवाज पूरे विश्व में जाने' वाला बता रहे थे।

मोदी जिसे 'यही हमारी पहचान है, यही हमारी ताकत है' बता कर रख रहे थे, वह इस देश की पहचान कभी नहीं रही। इस तरह के वैश्विक मामलों पर भारत सरकार की इतनी लिजलिजी, इतनी डरी हुई, इतनी अमरीका, इजरायल परस्त स्थिति कभी नहीं रही। आजादी के बाद से अपनाई गयी विदेश नीति का इतना नीचा स्तर स्वयं मोदी और भाजपा स्टैण्डर्ड से भी कुछ ज्यादा ही नीचा और शर्मनाक रहा है। यह वह देश है, जिसने हमेशा साम्राज्यवादी हमलों का विरोध किया है, साथ तो कभी भी नहीं दिया। कोरिया युद्ध, क्यूबा संकट, वियतनाम युद्ध से लेकर अफ्रीका, एशिया और लातिनी अमरीकी देशो के मुक्ति आंदोलनों पर भारत ने हमेशा पीड़ति देशों का साथ दिया। आजादी के बाद से ही उसने औपनिवेशिक दासता के शिकार रहे देशों को साम्राज्यवाद के विरुद्ध एकजुट करने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निबाही और गुट निरपेक्ष आन्दोलन जैसे ताकतवर संगठन को खड़ा करने में नेतृत्वकारी भूमिका निबाही। यह नजरिया नेताओं, सरकारों और सत्ता में बैठे दलों का नहीं था : देश का था, जो उसके द्वारा हासिल अनुभवों के बाद विकसित हुआ था। इन अनुभवों में कोई दो सदी की अंग्रेजों की गुलामी भर नहीं थी, आजादी के बाद सभी अमरीकी राष्ट्रपतियों द्वारा रची गयी भारत को कमजोर, अस्थिर, यहाँ तक कि विघटित करने की साजिशों के तजुर्बे भी शामिल थे। इन सबके चलते भारत ने दुनिया में एक हैसियत और सम्मान हासिल किया था। प्रधानमंत्री जी यही हमारी पहचान थी, यही हमारी ताकत थी। भारत की पहचान ट्रम्प से डरने-सहमने वाले की नहीं, जोन्सन, निक्सन, रीगन से होते हुए बुशों तक के सामने डट कर खड़े होने वाले की रही है। इजरायल के साथ गलबहियां करने वाले की नहीं, हमेशा फिलिस्तीन का साथ देने वाले की रही है। अलग-अलग दलों और गठबंधनों की सरकारें आने के बाद भी यह नीति बनी रही, क्योंकि यह दल-विशेष की नहीं, पूरे देश की विदेश नीति थी।

इसे समझने के लिए एक ही उदाहरण देख लेते है। 24 मार्च 2026 के मोदी के इस भाषण से ठीक 23 साल पहले 12 मार्च 2003 को भारत की संसद में उस समय के सबसे ज्वलंत मसले ईराक पर एक सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित हुआ था। उस वक़्त प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी थे और यह प्रस्ताव उन्हीं ने पेश किया था। इस प्रस्ताव में ईराक पर अमरीकी हमले की आशंका के मद्देनजर साफ़ कहा गया था कि "इराक में निरीक्षकों का कार्य जारी है। सुरक्षा परिषद को यह तय करना चाहिए कि आगे क्या कार्रवाई की जानी चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को ईराक द्वारा संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों के पूर्ण अनुपालन के उद्देश्य और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनाए जाने वाले साधनों, दोनों पर बहुत सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए। यह संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से सामूहिक निर्णय द्वारा सर्वोत्तम रूप से प्राप्त किया जा सकता है।" इस प्रस्ताव में यह भी कहा गया था कि "यदि अधिक समय देने और स्पष्ट मानदंड तैयार करने से संयुक्त राष्ट्र के ढांचे के भीतर निर्णय लेने में सुविधा होती है, तो हमारा मानना है कि इस विकल्प को मौका दिया जाना चाहिए। हमें आशा है कि सुरक्षा परिषद के सदस्य अपने रुख में सामंजस्य स्थापित करेंगे ताकि उनका अंतिम निर्णय संयुक्त राष्ट्र की वैधता और विश्वसनीयता को बढ़ाए।" उस समय भारत की संसद ने ईराक पर हमला करने की अमरीकी तैयारी का संज्ञान लेते हुए "किसी भी तरह की सैनिक कार्यवाही नहीं करने की बात कही थी।" इसी के साथ इस प्रस्ताव में बिलकुल स्पष्ट शब्दों में कहा गया था कि "यदि एकतरफावाद हावी होता है, तो संयुक्त राष्ट्र को गहरा आघात लगेगा, जिसके विश्व व्यवस्था के लिए विनाशकारी परिणाम होंगे। भारत सरकार दृढ़तापूर्वक आग्रह करती है कि कोई भी सैन्य कार्रवाई न की जाए, जिसे संयुक्त राष्ट्र की सामूहिक सहमति प्राप्त न हो।"

2003 में भारत की संसद सिर्फ यहीं तक नहीं रुकी थी, उसने ईराक पर लगाए गए प्रतिबंधों को भी हटाने की मांग की थी। प्रस्ताव में याद दिलाया गया था कि "भारत ने ईराक में गंभीर मानवीय स्थिति पर कई बार चिंता व्यक्त की है। ईराकी जनता एक दशक से अधिक समय से भीषण कमी और कठिनाइयों का सामना कर रही है। हमने लगातार कहा है कि यदि ईराक संबंधित सुरक्षा परिषद प्रस्तावों के प्रावधानों का पूरी तरह से पालन करता है, तो उस देश पर लगे प्रतिबंध हटा दिए जाने चाहिए।"

मौजूदा स्थितियां तो और भी ज्यादा स्पष्ट हैं। यहाँ तो और भी ज्यादा बेबाकी के साथ इससे भी आगे का रुख लिया जा सकता है। दुनिया के अनेक देश, जिनमें अमरीकी प्रभुत्व वाले नाटो और यूरोप के देश भी शामिल हैं, इस तरह का रुख सार्वजनिक रूप से ले भी रहे हैं। विश्व राजनीति में अमरीका और इजरायल जितना अलग-थलग आज है, उतना पहले कभी नहीं रहा। फिर क्या वजह है कि खुद को बड़ी अर्थव्यवस्था वाला बताने वाला, डेढ़ अरब आबादी के देश का प्रधानमंत्री अपने ही देश की अब तक की रीति-नीति पर चलने का साहस नहीं जुटा पा रहा। वाशिंगटन में ट्रम्प की घुड़की पर चुप्प लगाने, युद्ध रुकवाने के ट्रम्पियापे और 'मोदी जानते हैं, मैं उनका राजनीतिक कैरियर चौपट कर सकता हूँ' जैसी उसकी धमकियों के असर में खुद अपने देश की संसद में भी सच बोलने से हिचकिचा रहा है। क्या एप्सटीन की फाइल ही इसका एकमात्र कारण है? क्या गौतम अडानी के खिलाफ जारी सम्मन और गिरफ्तारी वारंट इसकी प्रमुख वजह है? नहीं!! वजह इनके साथ-साथ इनके अलावा भी है और वह जिस विचार से मोदी और उनकी पार्टी लिथड़ी हुई है, उस विचार में निहित है। 'समरथ को नहीं दोष गुंसाई' में विश्वास करने वाली यह समझदारी जिन्हें अपने से कमजोर मानती है, उन्हें निर्ममता से कुचलती है और जिन्हें अपने से ताकतवर मानती है, उनके आगे कातर भाव से नतमस्तक हो जाती है। उनकी मातहती को अपना सौभाग्य मानती है। ट्रम्प के दोबारा राष्ट्रपति बनने के बाद यह भाव कुछ ज्यादा ही मुखर हुआ है। मोदी जिस 'कम बताऊं – ज्यादा छुपाऊं' वक्तव्य को संसद में पढ़ रहे थे, उसे और भी मुक्त भाव से संघियों की आई टी सैल लिखती है और पढ़ाती है। अमरीका की बेहूदगियों और भारत के सार्वजनिक अपमान और तिरस्कार पर अपने नेता की खामोशी को 'राजनीतिक चतुराई' तथा टॉप क्लास डिप्लोमेसी बताती है। ऐसा करने में उसे बिलकुल भी अजीब नहीं लगता। अपने जन्म से ही उन्हें यह सब करने की आदत है : तब अंग्रेजों की आरती उतारते थे, अब अमरीका की पाद प्रदक्षिणा कर रहे हैं।

पक्षी देखने से मस्तिष्क का पुनः आकार बदल सकता है

तेज गति से चलने वाले डिजिटल उत्तेजना के प्रभुत्व वाले युग में, पक्षियों को देखने की शांत और धैर्यपूर्ण गतिविधि, जिसे अक्सर एक साधारण शौक के रूप में देखा जाता है, अब तंत्रिका वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित कर रही है। उभरते शोध से पता चलता है कि पक्षियों को देखना मन को आराम देने के अलावा और भी बहुत कुछ करता है; यह वास्तव में मस्तिष्क को नया रूप दे सकता है, संज्ञानात्मक क्षमताओं को बढ़ा सकता है और यहां तक कि आयु-संबंधी गिरावट से भी बचा सकता है।

हाल के वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चला है कि अनुभवी पक्षी निरीक्षकों के मस्तिष्क में मापनीय संरचनात्मक परिवर्तन होते हैं। शुरुआती लोगों की तुलना में, विशेषज्ञ पक्षीविद अधिक कॉम्पैक्ट और कुशल मस्तिष्क क्षेत्र दिखाते हैं जो ध्यान और धारणा से जुड़े होते हैं। ये परिवर्तन केवल प्रतीकात्मक नहीं हैं, वे सीधे तौर पर किसी व्यक्ति की पक्षियों को सटीक रूप से पहचानने की क्षमता से संबंधित हैं, यहां तक कि अपरिचित प्रजातियां भी।

यह घटना न्यूरोप्लास्टिसिटी का उदाहरण है, जिसमें मस्तिष्क की सीखने और अनुभव के माध्यम से स्वयं को पुनर्गठित करने की उल्लेखनीय क्षमता होती है। पक्षी देखने के लिए कौशल का एक अनूठा संयोजन आवश्यक है: तीव्र दृश्य अवलोकन, निरंतर ध्यान, पैटर्न पहचान और स्मृति। समय के साथ, इन कौशलों का अभ्यास करने से तंत्रिका पथ मजबूत होते हैं, जिससे मस्तिष्क अधिक कुशल और अनुकूलनीय हो जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि पक्षी देखने के लाभ कौशल विकास से भी आगे बढ़ जाते हैं। शोधकर्ताओं ने पाया है कि पक्षी-दर्शन से प्राप्त संज्ञानात्मक लाभ एक ज्ञानात्मक रिजर्व के रूप में कार्य कर सकते हैं, जो मस्तिष्क की उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करने में मदद करता है। जैसे-जैसे लोग बड़े होते हैं, मेमोरी और प्रोसेसिंग स्पीड जैसे कार्य आमतौर पर कम हो जाते हैं। हालाँकि, पक्षी देखने जैसी मानसिक उत्तेजक गतिविधियों में लगे व्यक्ति इन क्षमताओं को अधिक समय तक बनाए रखते हैं।

यह गतिविधि मानसिक स्वास्थ्य में भी योगदान देती है। अध्ययनों से पता चलता है कि पक्षियों को देखने से मनोवैज्ञानिक परेशानी कम होती है और समग्र मनोदशा में सुधार होता है। प्रकृति में रहना, पक्षियों का गीत सुनना और वर्तमान क्षण पर ध्यान केंद्रित करना तनाव के स्तर को कम कर सकता है और भावनात्मक संतुलन को बढ़ावा दे सकता है।

पक्षी देखने की क्षमता को विशेष रूप से शक्तिशाली बनाता है। इसके लिए महंगे उपकरण या विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है, बस जिज्ञासा, धैर्य और प्राकृतिक दुनिया का अवलोकन करने की इच्छा। चाहे वह ग्रामीण परिदृश्य हो या शहरी पार्क, कोई भी व्यक्ति पक्षियों की खोज में शामिल हो सकता है और इसके संज्ञानात्मक और भावनात्मक लाभ प्राप्त कर सकता है।

निष्कर्षतः, पक्षी देखना एक मनोरंजक मनोरंजन से कहीं अधिक है; यह एक मस्तिष्क-वर्धक गतिविधि है जिसका गहन वैज्ञानिक आधार है। ध्यान को तीव्र करके, स्मृति को बढ़ाकर और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देकर, यह दर्शाता है कि कैसे प्रकृति के साथ सरल बातचीत मानव मस्तिष्क में सार्थक परिवर्तन ला सकती है। प्रकृति से अधिकाधिक अलग होने वाली दुनिया में, शायद स्वस्थ मन का मार्ग आसमान की ओर देखने और पक्षियों के गीतों को सुनने में है। पक्षी-दर्शन एक शक्तिशाली, प्राकृतिक प्रकार का माइंडफुलनेस है। यह लोगों को बाहर निकलने, धीमा होने और वर्तमान क्षण पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिसे तनाव और चिंता को कम करने के लिए व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है। दो कारक जो पुराने होते हैं, मस्तिष्क के दीर्घकालिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं। हालांकि यह नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और पर्याप्त नींद जैसी अन्य स्वस्थ आदतों की आवश्यकता को प्रतिस्थापित नहीं करता है, लेकिन इससे यह संकेत मिलता है कि दूरबीन पहनना उम्र बढ़ने के साथ अपने दिमाग को तेज रखने का सबसे अधिक बौद्धिक रूप से उत्तेजक (और सस्ता) तरीका हो सकता है। डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

– डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

किताबों की ओर लौटते देश

आज के डिजिटल युग में, जहाँ हमारी आँखें अधिकतर समय स्मार्टफोन, लैपटॉप और टैबलेट की स्क्रीन पर टिकी रहती हैं, एक दिलचस्प चलन देखने को मिल रहा है—किताबों की ओर वापसी। सोशल मीडिया की भागदौड़ और सूचनाओं के सैलाब के बीच, लोग फिर से छपे हुए पन्नों की महक और किताबों के सुकून को अपना रहे हैं।

क्यों लौट रहे हैं लोग किताबों की ओर?

डिजिटल थकान ने लोगों को यह एहसास दिलाया है कि स्क्रीन से हटकर कुछ समय शांति से बिताना कितना जरूरी है। इसके पीछे कई ठोस कारण हैं:

गहन एकाग्रता: इंटरनेट पर हम अक्सर 'स्क्रॉलिंग' करते हैं, जिससे ध्यान भटकता है। किताब पढ़ना हमें एक ही विषय पर गहराई से सोचने और एकाग्र होने में मदद करता है।

मानसिक शांति: किताबों की दुनिया हमें वास्तविक जीवन के तनाव से दूर एक अलग संसार में ले जाती है। यह ध्यान का ही एक रूप है, जो मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।

तथ्यात्मक स्पष्टता: इंटरनेट पर जानकारी का भंडार है, लेकिन अक्सर वह भ्रामक हो सकती है। किताबें, विशेषकर गैर-काल्पनिक पुस्तकें, किसी विषय पर अधिक प्रामाणिक और व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करती हैं।

डिजिटल डिटॉक्स: लगातार नीली रोशनी के संपर्क में रहने के बाद, रात को सोने से पहले किताब पढ़ना आँखों को आराम देता है और नींद की गुणवत्ता में सुधार करता है।

नई पीढ़ी और किताबों का बढ़ता प्रेम

यह कहना गलत होगा कि आज की पीढ़ी केवल तकनीक की दीवानी है। वास्तव में, (टिकटॉक पर किताबों का समुदाय) और बुकस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्मों ने युवाओं में पढ़ने की रुचि को फिर से जिंदा किया है। किताबें अब केवल ज्ञान का जरिया नहीं, बल्कि एक 'लाइफस्टाइल स्टेटमेंट' भी बन गई हैं। पिछले कुछ वर्षों में यह धारणा बन गई थी कि तकनीक के विस्तार के साथ किताबों का महत्व कम हो जाएगा। लोग स्क्रीन पर पढ़ना पसंद करेंगे और पुस्तकालयों की जगह डिजिटल प्लेटफॉर्म ले लेंगे। लेकिन अब स्थिति बदलती दिखाई दे रही है। युवा वर्ग, जो पहले अधिकतर समय मोबाइल पर बिताता था, अब किताबों के प्रति आकर्षित हो रहा है। पुस्तक मेलों में बढ़ती भीड़, ऑनलाइन और ऑफलाइन बुक स्टोर्स की बढ़ती बिक्री और पुस्तकालयों में फिर से लौटती रौनक इस बात का प्रमाण हैं।

किताबें केवल ज्ञान का स्रोत नहीं होतीं, बल्कि वे हमारे विचारों को गहराई देती हैं, कल्पनाशक्ति को विकसित करती हैं और जीवन के प्रति संवेदनशील बनाती हैं। एक अच्छी किताब पाठक को सोचने पर मजबूर करती है, उसे नए दृष्टिकोण देती है और मानसिक शांति भी प्रदान करती है। डिजिटल माध्यमों में जहाँ त्वरित जानकारी मिलती है, वहीं किताबें गहन समझ विकसित करने का अवसर देती हैं।

इस परिवर्तन के पीछे कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है डिजिटल थकान। लगातार स्क्रीन पर समय बिताने से लोगों को मानसिक और शारीरिक थकान महसूस होने लगी है। ऐसे में किताबें एक शांत और सुकून भरा विकल्प बनकर उभर रही हैं। इसके अलावा, शिक्षा के क्षेत्र में भी किताबों के महत्व को फिर से समझा जा रहा है। शिक्षक और अभिभावक बच्चों को किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं ताकि उनका सर्वांगीण विकास हो सके।

सरकार और सामाजिक संस्थाएँ भी इस दिशा में प्रयास कर रही हैं। विभिन्न शहरों में पुस्तक मेले आयोजित किए जा रहे हैं, पुस्तकालयों का आधुनिकीकरण किया जा रहा है और पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए अभियान चलाए जा रहे हैं। यह पहल न केवल पढ़ने की आदत को बढ़ावा देती है, बल्कि समाज में बौद्धिक विकास की नींव भी मजबूत करती है।

हालाँकि, यह भी आवश्यक है कि किताबों के प्रति यह बढ़ती रुचि केवल एक अस्थायी प्रवृत्ति न बनकर स्थायी आदत में बदल जाए। इसके लिए परिवार, विद्यालय और समाज सभी को मिलकर प्रयास करने होंगे। बच्चों को बचपन से ही किताबों के साथ जोड़ना होगा और पढ़ने को एक आनंददायक अनुभव बनाना होगा।

अंततः, किताबों की ओर लौटता देश एक सकारात्मक संकेत है। यह न केवल ज्ञान के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है, बल्कि यह भी बताता है कि आधुनिकता के बीच हम अपनी जड़ों और मूल्यों को नहीं भूल रहे। किताबें हमेशा से हमारी सच्ची मित्र रही हैं और यह वापसी इस बात का प्रमाण है कि उनका महत्व कभी कम नहीं हो सकता।

– डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

भारतीय ज्ञान परम्परा: प्रभाव और विकास

भारत की ज्ञान परम्परा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध परम्पराओं में से एक रही है। यह परम्परा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रही, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—आध्यात्म, विज्ञान, समाज, शिक्षा और संस्कृति—को गहराई से प्रभावित करती रही है। भारतीय ज्ञान प्रणाली ने मानव जीवन को संतुलित, नैतिक और समग्र दृष्टि से देखने का मार्ग प्रशस्त किया।

प्राचीन आधार और स्वरूप

भारतीय ज्ञान परम्परा की जड़ें वेद, उपनिषद, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों में निहित हैं। इन ग्रंथों में केवल धार्मिक विचार ही नहीं, बल्कि जीवन के गहन दर्शन, नैतिकता, कर्तव्य और सामाजिक व्यवस्था का भी विस्तृत वर्णन मिलता है। गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से शिक्षा का प्रसार हुआ, जहाँ विद्यार्थी प्रकृति के सान्निध्य में रहकर ज्ञान प्राप्त करते थे।

विज्ञान और तकनीकी योगदान

भारतीय ज्ञान परम्परा ने विज्ञान के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। आर्यभट्ट ने गणित और खगोलशास्त्र में क्रांतिकारी खोजें कीं, जबकि सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा (सर्जरी) की नींव रखी। आयुर्वेद, योग और ज्योतिष जैसे विषयों ने स्वास्थ्य और जीवनशैली को संतुलित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समाज और संस्कृति पर प्रभाव

भारतीय ज्ञान परम्परा ने समाज को नैतिक मूल्यों—सत्य, अहिंसा, करुणा और सहिष्णुता—की शिक्षा दी। महात्मा गांधी ने इन्हीं मूल्यों के आधार पर स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया। इस परम्परा ने विविधता में एकता की भावना को मजबूत किया और विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के बीच सामंजस्य स्थापित किया।

मध्यकालीन और आधुनिक विकास

मध्यकाल में भक्ति और सूफी आंदोलनों ने ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाया। संतों और कवियों ने सरल भाषा में आध्यात्मिक और सामाजिक संदेश दिए। आधुनिक काल में भारतीय ज्ञान परम्परा ने नई शिक्षा प्रणाली, विज्ञान और तकनीक के साथ समन्वय स्थापित किया। आज, भारत में नई शिक्षा नीति के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली को पुनः शिक्षा का हिस्सा बनाया जा रहा है। योग, आयुर्वेद और पारंपरिक ज्ञान को वैश्विक स्तर पर भी पहचान मिल रही है।

वर्तमान में महत्व और भविष्य

आज के तकनीकी युग में भारतीय ज्ञान परम्परा और भी प्रासंगिक हो गई है। यह हमें केवल जानकारी नहीं, बल्कि सही जीवन जीने की कला सिखाती है। पर्यावरण संरक्षण, मानसिक शांति और सामाजिक संतुलन जैसे मुद्दों पर यह परम्परा मार्गदर्शन प्रदान करती है।

– डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

आधुनिक समाज में यौनता का अतिशय

(खुलापन या भ्रम–मीडिया, मार्केट और बदलती मानसिकता के बीच आकर्षण का अतिरेक, और खोती हुई मानवीय संवेदनाओं का संकट)

डॉ. सत्यवान सौरभ

आज का समय एक विचित्र द्वंद्व का समय है। एक ओर हम स्वयं को आधुनिक, जागरूक और खुला समाज घोषित करते हैं, तो दूसरी ओर हमारी चेतना का एक बड़ा हिस्सा लगातार एक ही बिंदु के इर्द-गिर्द सिमटता जा रहा है—देह, आकर्षण और कामना का अतिशय प्रदर्शन। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि बीते दो-तीन दशकों में जीवन के लगभग हर क्षेत्र में "सेक्स" एक केंद्रीय विमर्श के रूप में उभरा है, किंतु यह विमर्श संतुलित या संवेदनशील न होकर अधिकतर बाज़ार, उपभोग और सतही उत्तेजना तक सीमित रह गया है। परिणामस्वरूप, जो विषय स्वाभाविक, निजी और मानवीय अनुभव का हिस्सा होना चाहिए था, वह अब एक उत्पाद, एक रणनीति और निरंतर परोसी जाने वाली सामग्री में परिवर्तित हो गया है।

बाज़ार ने इस परिवर्तन को सबसे पहले पहचाना और सबसे आक्रामक रूप में भुनाया। विज्ञापनों से लेकर फिल्मों, वेब सीरीज़ और सोशल मीडिया तक, हर जगह देह का एक विशेष प्रकार का चित्रण दिखाई देता है, जो आकर्षण को बेचने का सबसे आसान माध्यम बन चुका है। साबुन, शैम्पू, कपड़े, यहाँ तक कि रोज़मर्रा की साधारण वस्तुओं के प्रचार में भी यौन संकेतों का प्रयोग अब सामान्य हो गया है। यह प्रवृत्ति केवल उत्पाद बेचने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि धीरे-धीरे दर्शकों की संवेदनाओं और अपेक्षाओं को भी प्रभावित करती है। जब हर ओर एक ही तरह का संदेश बार-बार दोहराया जाता है, तो वह सामान्य प्रतीत होने लगता है—और यही सामान्यीकरण सबसे बड़ी चिंता का विषय है।

इस बदलते परिदृश्य में केवल बाज़ार ही नहीं, बल्कि वे क्षेत्र भी शामिल हो गए हैं जो कभी मूल्य, अनुशासन और संतुलन के प्रतीक माने जाते थे। शिक्षा, अध्यात्म, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत विकास जैसे क्षेत्रों में भी "बेहतर जीवन" की परिभाषा को एक विशेष दिशा में मोड़ दिया गया है। जीवन की जटिलताओं का समाधान अब अक्सर इस रूप में प्रस्तुत किया जाता है कि व्यक्ति अपनी "सेक्स लाइफ" को बेहतर बना ले, मानो यह जीवन के हर असंतुलन का अंतिम उत्तर हो। यह सरलीकरण न केवल भ्रामक है, बल्कि जीवन के अन्य महत्वपूर्ण आयामों—जैसे मानसिक शांति, संबंधों की गहराई, सामाजिक जिम्मेदारी और आत्मिक संतुलन—को भी हाशिये पर डाल देता है।

इस पूरे परिदृश्य का सबसे गहरा प्रभाव मानवीय संबंधों पर पड़ा है। रिश्तों की जो आत्मीयता, सहजता और भरोसा कभी उनकी आधारशिला हुआ करती थी, वह धीरे-धीरे प्रदर्शन, अपेक्षा और तुलना के दबाव में कमजोर होती जा रही है। प्रेम, जो कभी एक गहरी अनुभूति और आत्मिक जुड़ाव का प्रतीक था, अब अक्सर बाहरी अभिव्यक्तियों और शारीरिक आकर्षण तक सीमित कर दिया जाता है। इससे न केवल संबंधों की गुणवत्ता प्रभावित होती है, बल्कि व्यक्ति के भीतर एक स्थायी असंतोष भी जन्म लेता है, क्योंकि वह लगातार एक आदर्श छवि को पाने की कोशिश में रहता है, जो वास्तविकता से कोसों दूर होती है।

स्त्री-पुरुष संबंधों के संदर्भ में यह बदलाव और भी जटिल हो जाता है। स्त्री का चित्रण लंबे समय से समाज में बहस का विषय रहा है, किंतु वर्तमान समय में यह चित्रण एक नए प्रकार के वस्तुकरण की ओर संकेत करता है। स्त्री को एक व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक उत्पाद के रूप में प्रस्तुत किया जाना उसकी पहचान को सीमित कर देता है। यह प्रवृत्ति केवल पुरुष दृष्टि तक सीमित नहीं है, बल्कि कई बार स्वयं स्त्रियाँ भी इसी ढाँचे के भीतर अपनी स्वीकृति तलाशने लगती हैं। इससे एक ऐसा चक्र निर्मित होता है, जिसमें वास्तविक स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की जगह बाहरी मानकों को पूरा करने की होड़ ले लेती है। मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने इस प्रवृत्ति को और तीव्र कर दिया है। एल्गोरिद्म आधारित दुनिया में वही सामग्री अधिक दिखाई जाती है जो तुरंत ध्यान आकर्षित करे और अधिक प्रतिक्रिया प्राप्त करे। ऐसे में गहराई, संवेदना और विचारशीलता की जगह उत्तेजना, सनसनी और त्वरित संतुष्टि को प्राथमिकता मिलती है। यह न केवल दर्शकों की पसंद को प्रभावित करता है, बल्कि रचनाकारों को भी उसी दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करता है। धीरे-धीरे यह एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करता है, जहाँ गंभीरता और संवेदनशीलता को कम महत्व दिया जाता है।

इस सबके बीच एक और गंभीर पहलू उभरता है—सुरक्षा और नैतिकता का प्रश्न। जब समाज में देह और यौनता का अत्यधिक और असंतुलित प्रदर्शन होता है, तो उसका प्रभाव व्यवहार पर भी पड़ता है। यह कहना उचित नहीं होगा कि केवल इसी कारण अपराध बढ़ते हैं, किंतु यह भी सत्य है कि एक असंतुलित और विकृत दृष्टिकोण सामाजिक वातावरण को प्रभावित करता है। बच्चों और किशोरों पर इसका प्रभाव विशेष रूप से चिंताजनक है, क्योंकि वे अभी अपने मूल्यों और समझ का निर्माण कर रहे होते हैं। जब वे हर ओर एक ही प्रकार के संकेत देखते हैं, तो उनके लिए सही और गलत के बीच संतुलन स्थापित करना कठिन हो जाता है।

यह स्थिति हमें एक महत्वपूर्ण प्रश्न के सामने खड़ा करती है—क्या वास्तव में हम एक अधिक परिपक्व और खुले समाज की ओर बढ़ रहे हैं, या केवल एक ऐसे भ्रम में जी रहे हैं, जहाँ खुलापन केवल प्रदर्शन तक सीमित है? परिपक्वता का अर्थ केवल वर्जनाओं को तोड़ना नहीं होता, बल्कि यह समझना भी होता है कि किस सीमा तक, किस संदर्भ में और किस संवेदनशीलता के साथ किसी विषय को देखा और प्रस्तुत किया जाना चाहिए। यदि इस संतुलन की अनदेखी की जाती है, तो खुलापन भी एक नए प्रकार की बंदिश में परिवर्तित हो सकता है।

समाधान इस स्थिति से भागने में नहीं, बल्कि उसे समझने और संतुलित करने में निहित है। यौनता मानव जीवन का एक स्वाभाविक और महत्वपूर्ण हिस्सा है, किंतु इसे जीवन का केंद्र बना देना न तो आवश्यक है और न ही स्वस्थ। हमें यह स्वीकार करना होगा कि जीवन की समृद्धि केवल एक आयाम में नहीं, बल्कि अनेक आयामों के संतुलन में निहित है। शिक्षा, कला, साहित्य और मीडिया को इस संतुलन को पुनः स्थापित करने की दिशा में प्रयास करना होगा, ताकि समाज में एक अधिक संवेदनशील और जिम्मेदार दृष्टिकोण विकसित हो सके।

अंततः, यह केवल बाहरी परिवर्तन का प्रश्न नहीं, बल्कि आंतरिक जागरूकता का भी विषय है। जब तक व्यक्ति स्वयं यह नहीं समझेगा कि वह क्या देख रहा है, क्यों देख रहा है और उसका उस पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, तब तक कोई भी बाहरी प्रयास अधूरा रहेगा। हमें अपने भीतर उस संवेदनशीलता को पुनः जागृत करना होगा, जो किसी व्यक्ति को केवल देह नहीं, बल्कि एक संपूर्ण अस्तित्व के रूप में देख सके। यही वह दिशा है, जो हमें इस अतिरेक और असंतुलन से बाहर निकालकर एक अधिक मानवीय, संतुलित और सार्थक समाज की ओर ले जा सकती है।

21वीं शताब्दी का मार्गदर्शक: जैन दर्शन और महावीर जयंती का संदेश

समकालीन युग अनेक प्रकार के संकटों, द्वंद्वों और जटिलताओं से घिरा हुआ है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की तीव्र प्रगति के बावजूद मानवता के समक्ष शांति, संतुलन और सहअस्तित्व के प्रश्न पहले से अधिक गहरे होते जा रहे हैं। ऐसे समय में यह विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है कि आने वाली शताब्दी का मार्गदर्शक दर्शन जैन धर्म हो सकता है। विशेष रूप से महावीर जयंती के अवसर पर यह विमर्श और भी सार्थक हो जाता है, क्योंकि यह दिन केवल उत्सव नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों के पुनर्स्मरण का अवसर है।

जैन धर्म का मूल स्वरूप कर्मकाण्ड से परे एक गहन दार्शनिक दृष्टि प्रस्तुत करता है। यह मनुष्य को बाहरी आडंबरों से मुक्त कर आत्मानुशासन, संयम और विवेक की ओर प्रेरित करता है। भगवान महावीर ने अपने जीवन के माध्यम से यह सिद्ध किया कि सच्चा धर्म वही है, जो व्यवहार में उतरे और समाज को दिशा दे। महावीर जयंती हमें उनके द्वारा दिए गए संदेशों—अहिंसा, सत्य और त्याग—को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देती है।

जैन दर्शन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह किसी वर्ग विशेष तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सामान्य जन तक पहुँचने का प्रयास करता है। प्राकृत और पाली जैसी जनभाषाओं को अपनाकर जैन आचार्यों ने यह सुनिश्चित किया कि उनका संदेश हर व्यक्ति तक पहुँचे और उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सके।

दुनिया के अनेक धर्मों में जहाँ शक्ति का प्रदर्शन प्रतीकों और आयुधों के माध्यम से होता है, वहीं जैन परंपरा में तीर्थंकरों का स्वरूप पूर्णतः अहिंसक और शांतिपूर्ण है। उनके साथ किसी प्रकार का शस्त्र नहीं, बल्कि समस्त जीवों के प्रति करुणा का भाव जुड़ा हुआ है। आज जब विश्व हिंसा और संघर्ष की चुनौतियों से जूझ रहा है, तब यह दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक हो उठता है।

जैन दर्शन का आधार तीन प्रमुख सिद्धांतों पर टिका है—अहिंसा, अनेकान्तवाद और अपरिग्रह। अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा का अभाव नहीं, बल्कि विचार और व्यवहार में भी संवेदनशीलता का विस्तार है। अनेकान्तवाद यह सिखाता है कि सत्य को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझना आवश्यक है। अपरिग्रह सीमित संसाधनों में संतुलित जीवन जीने का मार्ग दिखाता है। महावीर जयंती इन तीनों सिद्धांतों को आत्मसात करने का उपयुक्त अवसर प्रदान करती है।

वर्तमान समय जल संकट, पर्यावरणीय असंतुलन और संसाधनों के अंधाधुंध दोहन की चुनौतियों से जूझ रहा है। जैन जीवन शैली, जो संयम और न्यूनतम उपभोग पर आधारित है, इन समस्याओं का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करती है। शाकाहार और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता न केवल स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के लिए भी अनिवार्य है।

नारी सशक्तिकरण के संदर्भ में भी जैन धर्म की परंपरा उल्लेखनीय है। यहाँ साध्वियों को सम्मान और स्वतंत्रता प्राप्त है, जो समाज में समानता और गरिमा के मूल्यों को सुदृढ़ करती है। यह दृष्टिकोण आधुनिक समाज के लिए प्रेरणास्रोत बन सकता है।

जैन दर्शन आत्मा और शरीर के भेद को स्पष्ट करते हुए मनुष्य को आत्मचिंतन की ओर प्रेरित करता है। यह बताता है कि वास्तविक शक्ति बाह्य साधनों में नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन और चेतना में निहित है। यही विचार मनुष्य को व्यापक मानवता और वैश्विक बंधुत्व की ओर अग्रसर करता है।

आज जब विश्व असहिष्णुता और वैचारिक टकराव के दौर से गुजर रहा है, तब जैन दर्शन का अनेकान्तवादी दृष्टिकोण संवाद और सहअस्तित्व का मार्ग प्रशस्त करता है। यह हमें सिखाता है कि भिन्नताओं के बावजूद एकता संभव है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि जैन धर्म केवल एक आस्था नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए जीवन जीने की एक श्रेष्ठ पद्धति है। महावीर जयंती के पावन अवसर पर यदि हम भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाने का संकल्प लें, तो न केवल व्यक्तिगत जीवन में संतुलन आएगा, बल्कि समाज और विश्व में भी शांति, समरसता और सद्भाव का वातावरण निर्मित होगा। यही २१वीं शताब्दी की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

-अजय कुमार बियानी,
सेवानिवृत्त अभियंता एवं स्वतंत्र लेखक

हम खुद का आंकलन दूसरे से श्रेष्ठ करने की चूक से बचें स्वयं को छोटा कहलाने वाला व्यक्ति सबसे श्रेष्ठ गुणवान होता है - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - सृष्टि में खूबसूरत मानवीय जीव की रचना कर रचनाकर्ता नें उसमें गुण और अवगुण रूपी दो गुलदस्ते भी जोड़े हैं और उनका चयन करने के लिए 84 लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ बुद्धि का सृजन मानवीय योनि में कर अपने भले बुरे सोचनें का हक उसी को दिया है,परंतु हम अपनीं जीवन यात्रा में देखते हैं कि मानवीय जीव अवगुण रूपी गुलदस्ते का चुनाव खुद कर उसमें ढल जाता है और अंत में दोष सृष्टि रचनाकर्ता को ही देता है कि मेरे जीवन को नरक बना दिया जबकि गलती मानवीय जीव की ही है कि उसने ही अपनी बुद्धि से उस अवगुण रूपी गुलदस्ते को चुना,मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि कहावत ₹जब हम एक उंगली उठाते हैं, तो तीन उंगलियां हमारी ओर इशारा करती हैं₹ अक्सर आत्म-चिंतन और जवाबदेही के विचार से जुड़ी होती है। यह वाक्यांश बताता है कि जब हम किसी और पर आरोप लगाते हैं या दोष देते हैं,तो हमको उस स्थिति में अपनी गलतियों या योगदानों पर भी विचार करना चाहिए।हालांकि इस कहावत की सटीक उत्पत्ति स्पष्ट नहीं है, लेकिन यह विभिन्न सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपराओं में पाए जाने वाले विषयों को समाहित करती है।यह प्रक्षेपण के बारे में मनोविज्ञान की अवधारणाओं के साथ संरेखित है, जहां व्यक्ति अपने अवांछनीय गुणों या व्यवहारों को दूसरों पर आरोपित करते हैं। उंगलियों की छवि यह दर्शाती है कि आलोचना अक्सर आलोचना के विषय की तुलना में आलोचक के बारे में अधिक दर्शाती है।इस वाक्यांश की खूबसूरती यह है कि यह किसी और को दोष देने के बजाय आत्मनिरीक्षण करने पर मजबूर करता है।यूं तो अवगुणों को सैकड़ों शब्दों, बुराइयों से पुकारा जाता है जिसमें आज हम निंदा बुराई, दूसरों पर उंगली उठाना इस अवगुण की चर्चा कर करेंगे आओ निंदा रूपी अवगुण त्यागने का संकल्प लें।हम खुद का आंकलन दूसरे से श्रेष्ठ करने की चूक से बचें स्वयं को छोटा कहलाने वाला व्यक्ति सबसे श्रेष्ठ गुणवान होता है।

साथियों बात अगर हम निंदा की करें तो किसी ने खूब ही कहा है कि, संसार में प्रत्येक जीव की रचना ईश्वर अल्लाह ने किसी उद्देश्य से की है। हमें ईश्वर अल्लाह की किसी भी रचना का मखौल उड़ाने का अधिकार नहीं है।इसलिए किसी की निंदा करना साक्षात परमात्मा की निंदा करने के समान है।किसी की आलोचना से आप खुद के अहंकार को कुछ समय के लिए तो संतुष्ट कर सकते हैं किन्तु किसी की काबिलियत, नेकी, अच्छाई और सच्चाई की संपदा को नष्ट नहीं कर सकते। जो सूर्य की तरह प्रखर है, उस पर निंदा के कितने ही काले बादल छा जाएं किन्तु उसकी प्रखरता, तेजस्विता और ऊष्णता में कमी नहीं आ सकती।

साथियों बात अगर हम खुद का आंकलन दूसरों से सर्वश्रेष्ठ करने की करें तो, अपनी प्रशंसा तथा दूसरों की निंदा असत्य के समान है। जैसे हमारी आंखें चंद्रमा के कलंक तो देख लेती हैं , किंतु अपने काजल को नहीं देख पातीं। उसी प्रकार हम दूसरों के दोषों को देखते हैं , हालांकि खुद अनेक दोषों से भरे हैं। दूसरों में जो दोष दिखाई देते हैं , सचमुच उनका कारण हमारे अपने चित्त की दूषित वृत्तियां ही है। दूसरों की निंदा किसी भी दृष्टि से हितकर नहीं होती। इस संबंध में एक कवि ने लिखा भी है कि हमें परखने का तरीका नहीं है। कोई वरना दुश्मन किसी का नहीं है। निंदक को यह याद रखना चाहिए कि दुनिया तुझे हजारों आंखों से देखेगी , जबकि तू दुनिया को दो ही आंखों से देख सकेगा।

साथियों बात अगर हम दूसरों पर एक उंगली उठाने की करें तो, जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के दोषों पर उंगली उठाता है , तो उसे याद रखना चाहिए कि पीछे की और मुड़ी उसकी तीन उंगलियां पहले उसी की ओर संकेत कर रही होती हैं। निंदा- चुगली व्यर्थ ही है। इससे परस्पर वैमनस्य , कटुता और संघर्ष बढ़ते हैं। इसीलिए कहा है कि दूसरों के कृत्याकृत्यों को न देखो , केवल अपने ही कृत्यों का अवलोकन करो। यूं तो लोग चुप रहने वाले की निंदा करते हैं। बहुत बोलने वाले की निंदा करते हैं ,मातृ भाषी की निंदा करते हैं , संसार में ऐसा कोई नहीं है , जिसकी निंदा न होती हो, इसीलिए कहा है- जैसी जाकी बुद्धि है , तैसी कहै बनाय। ताको बुरा न मानिए , लेन कहां यूं जाए। ' केवल दूसरों द्वारा अपनी निंदा सुनकर मनुष्य अपने को निंदित न समझें , वह अपने आप को स्वयं ही जाने , क्योंकि लोक तो निरंकुश है , जो चाहता है सो कह देता है। द्वेषी गुणं न पश्यति , दोषी गुणों को नहीं देखता।

साथियों बात अगर हम पर निंदा में आनंद की करेंतो परनिंदा में प्रारंभ में काफी आनंद मिलता है लेकिन बाद में निंदा करने से मन में अशांति व्याप्त होती है और हम हमारा जीवन दुःखों से भर लेते हैं। प्रत्येक मनुष्य का अपना अलग दृष्टिकोण एवं स्वभाव होता है। दूसरों के विषय में कोई अपनी कुछ भी धारणा बना सकता है। हर मनुष्य का अपनी जीभ पर अधिकार है और निंदा करने से किसी को रोकना संभव नहीं है। न विना परवादेन रमते दुर्जनोजनः काकःसर्वरसान भुक्ते विनामध्यम न तृप्यति।।अर्थ-लोगों की निंदा (बुराई) किये बिना दुष्ट (बुरे) व्यक्तियों को आनंद नहीं आता। जैसे कौवा सब रसों का भोग करता है परंतु गंदगी के बिना उसकी संतुष्टि नहीं होती, लोग अलग-अलग कारणों से निंदा रस का पान करते हैं। कुछ सिर्फ अपना समय काटने के लिए किसी की निंदा में लगे रहते हैं तो कुछ खुद को किसी से बेहतर साबित करने के लिए निंदा को अपना नित्य का नियम बना लेते हैं। निंदकों को संतुष्ट करना संभव नहीं है।

साथियों बात अगर हम निंदा पर वैश्विक विचारों की करें तो, महात्मा गांधी ने भी कहा है कि दूसरों के दोष देखने की बजाय हम उनके गुणों को ग्रहण करें। दूसरों की निंदा अश्रेयस्कारी है। निंदा करने व सुनने में व्यक्ति प्रायः आनंद लेता है। जबकि निंदा सुनना व निंदा करना, दोनों ही विषय है। इसीलिए हमारे महापुरुषों ने तो कहा है ' सपनेहां नहिं देखा परदोषा !अर्थात स्वप्न में भी पराये दोषों को न देखना। भगवान बुद्ध ने कहा है , जो दूसरों के अवगुणों की चर्चा करता है , वह अपने अवगुण प्रकट करता है। भगवान महावीर ने भी कहा है कि किसी की निंदा करना पीठ का मांस खाने के बराबर है। विधाता प्रायः सभी गुणों को किसी एक व्यक्ति या एक स्थान पर नहीं देता है। ईसा मसीह ने कहा था ,लोग दूसरों की आंखों का तिनका तो देखते हैं, पर अपनी आंख के शहतीर को नहीं देखते। हेनरी फोर्ड ने कहा कि मैं हमेशा दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करता हूं। हमारी सद्भावना या दुर्भावना ही किसी को मित्र या शत्रु मानने के लिए बाध्य करती है।सद्भावना अनुकूल स्थिति के कारण होती है और दुर्भावना प्रतिकूल स्थिति के कारण होती है। लोगों के छिपे हुए ऐब जाहिर मत करो। इससे उसकी इज्जत तो जरूर घट जाएगी, मगर तेरा तो ऐतबार ही उठ जाएगा।

साथियों बात अगर हम दूसरों के दोष ढूंढना, निंदा करना मानवीय स्वभाव की करें तो, दूसरों की निंदा करना। सदैव दूसरों में दोष ढूंढते रहना मानवीय स्वभाव का एक बड़ा अवगुण है। दूसरों में दोष निकालना और खुद को श्रेष्ठ बताना कुछ लोगों का स्वभाव होता है। इस तरह के लोग हमें कहीं भी आसानी से मिल जाएंगे। प्रतिवाद में व्यर्थ समय गंवाने से बेहतर है अपने मनोबल को और भी अधिक बढ़ाकर जीवन में प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहें। ऐसा करने से एक दिन आपकी स्थिति काफी मजबूत हो जाएगी और आपके निंदकों को सिवाय निराशा के कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। इसलिए सब तरफ गुण ही ढूंढने की आदत डालो। देखो कितना आनंद आता है। दुनिया में पूर्ण कौन है हरेक में कुछ न कुछ त्रुटियां रहती हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि न विना परवादेन रमते दुर्जनोजनः। काकःसर्वरसान भुक्ते विनामध्यम न तृप्यति।।आओ निंदा त्यागने का संकल्प लें हम एक उंगली दूसरों पर उठाते हैं तो तीन उंगलियां हमारे तरफ उठती है इसको रेखांकित करना ज़रूरी है हम खुद का आंकलन दूसरे से सर्वश्रेष्ठ करने की चूक से बचें, स्वयं का छोटा कहलानें वाले व्यक्ति सर्वश्रेष्ठ गुणवान होतें है।

धालीवाल द्वारा बीएसएफ और समाजसेवियों की भागीदारी से अजनाला शहर में "स्वच्छता ही सेवा" मिशन के तहत अभियान का शुभारंभ

साहिल बेरी

अमृतसर। आज अजनाला शहर में सूर्योदय से पहले सुबह के समय आम आदमी पार्टी के प्रदेश मुख्य प्रवक्ता और विधायक कुलदीप सिंह धालीवाल ने बीएसएफ की 117 बटालियन के अधिकारियों व जवानों, नगर पंचायत अजनाला के काउंसिलरों, पार्टी वॉलंटियर्स, सफाई कर्मचारियों और समाजसेवियों की बड़ी भागीदारी के साथ "स्वच्छता ही सेवा" मिशन के तहत शहर को साफ-सुथरा रखने के अभियान का शुभारंभ किया। इस अभियान में बीएसएफ के डिप्टी कमांडेंट प्रमोद कुमार द्विवेदी, पंजाब महिला आयोग की उपाध्यक्ष गीता गिल, नगर पंचायत अजनाला के प्रधान भट्टी जसपाल सिंह ढिल्लों, ब्लॉक प्रधान दविंदर सिंह सोनू, काउंसिलर

अविनाश सहित बड़ी संख्या में समाजसेवी उपस्थित रहे।

इस मौके पर धालीवाल ने कहा कि देश को आजादी दिलाने वाले स्वतंत्रता सेनानियों का नारा था कि आजादी के साथ-साथ एक स्वस्थ भारत के निर्माण के लिए ग्रामीण और शहरी लोगों में स्वच्छता अत्यंत जरूरी है। उन्होंने कहा कि राज्य में भगवंत मान सरकार पहले ही भ्रष्टाचार, नशे और अन्य बुराइयों को खत्म करने के लिए "झाड़ू" उठा चुकी है और अब आसपास की गंदगी को साफ करने के लिए भी यह अभियान शुरू किया गया है।

उन्होंने "स्वच्छता ही सेवा" मिशन के लिए बीएसएफ की 117 बटालियन द्वारा दिए गए सहयोग के लिए विशेष धन्यवाद किया और अजनाला शहर सहित ग्रामीण लोगों से अपील की कि वे कूड़ा-कचरा इधर-उधर न फेंकें, बल्कि ऐसा करने वालों को भी रोकें। उन्होंने कहा कि गंदगी बीमारियों का घर है, इसलिए एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए स्वच्छता को अपनाना जरूरी है। साथ ही, उन्होंने नशों और अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ चल रही मुहिम की तरह "स्वच्छता ही सेवा" को भी एक जन आंदोलन बनाने का आह्वान किया।

विकास की अंधी दौड़ में सुलगता लद्दाख

विवेक रंजन श्रीवास्तव

हिमालय की धवल चोटियों और लद्दाख के शीत मरुस्थल से उठी सोनम वांगचुक की आवाज आज केवल एक क्षेत्रीय मांग नहीं बल्कि विकास के नाम पर किए जा रहे खनन से कराहती हुई धरती की पुकार है। लद्दाख, जिसे भौगोलिक रूप से 'थर्ड पोल' या दुनिया का तीसरा ध्रुव कहा जाता है, अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और नाजुक पारिस्थितिकी के कारण वैश्विक जलवायु विमर्श के केंद्र में आ गया है। इस पूरे प्रकरण की जड़ें उस संवैधानिक सुरक्षा की मांग में छिपी हैं, जो भारतीय संविधान की छठी अनुसूची में दर्ज है। इसके पीछे का असली संकट पर्यावरणीय विनाश की आहट है।

सोनम वांगचुक ने जब शून्य से नीचे के तापमान में 21 दिनों का 'सात्विक अनशन' शुरू किया तो उनका उद्देश्य केवल राजनीतिक अधिकार प्राप्त करना नहीं था बल्कि उन ग्लेशियरों को बचाना था जो उत्तर भारत की जीवनधारा कहे जाने वाले जलतंत्र के मुख्य स्रोत हैं। लद्दाख की लगभग 97 प्रतिशत आबादी जनजातीय है जिनमें बौद्ध और मुस्लिम समुदायों का अनूठा मिश्रण है। ये जनजातियां सदियों से प्रकृति के साथ एक संतुलित तालमेल बिठाकर जीती आई हैं लेकिन पिछले कुछ दशकों में बढ़ते शहरीकरण, अनियंत्रित पर्यटन और औद्योगिक महत्वाकांक्षाओं ने इस संतुलन को हिला दिया है।

वांगचुक द्वारा रेखांकित प्रमुख मुद्दा यह है कि यदि लद्दाख को विशेष संवैधानिक दर्जा नहीं मिलता, तो बाहरी उद्योगों और खनन माफियाओं के लिए इस शांत और संवेदनशील क्षेत्र के द्वार खुल जाएंगे जिससे यहां के ग्लेशियरों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

आंकड़ों की दृष्टि से देखें तो हिमालयी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन की दर वैश्विक औसत से कहीं अधिक तेज है। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि यदि वर्तमान दर से कार्बन उत्सर्जन जारी रहा, तो इस सदी के अंत तक हिंदूकुश-हिमालय क्षेत्र के एक-तिहाई ग्लेशियर पिघल सकते हैं। लद्दाख के लिए यह स्थिति किसी प्रलय से कम नहीं होगी क्योंकि यहां वार्षिक वर्षा नगण्य होती है और पूरी कृषि व्यवस्था ग्लेशियरों से निकलने वाले पानी पर ही टिकी है। वांगचुक ने अपने प्रयोगों और 'आइस स्तूप' जैसे नवाचारों के माध्यम से यह दिखाया है कि कैसे स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण किया जा सकता है लेकिन वे यह भी जानते हैं कि व्यक्तिगत प्रयास तब तक निष्प्रभावी रहेंगे जब तक कि नीतिगत स्तर पर बड़े उद्योगों को इस क्षेत्र से दूर नहीं रखा जाता। लद्दाख में सौर ऊर्जा और पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं लेकिन इनके अंधाधुंध विस्तार से स्थानीय संसाधनों पर भारी दबाव पड़ रहा है। एक अनुमान के अनुसार, लद्दाख में आने वाले पर्यटकों की संख्या वहां की स्थानीय आबादी से कई गुना अधिक पार हो चुकी है जिसके कारण कचरा प्रबंधन और पानी की खपत की समस्या विकराल हो चली है।

स्थानीय जनजातीय समुदायों की भूमिका इस पूरे प्रकरण में सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि वे ही इन पहाड़ों के असली संरक्षक हैं। उनकी पारंपरिक जीवनशैली न्यूनतम संसाधनों में अधिकतम संतुष्टि पर आधारित है, जो आज के 'कंज्यूमर कल्चर' के सर्वथा विपरीत है।

वांगचुक के इस आंदोलन ने वैश्विक जलवायु न्याय के सिद्धांत को भी मजबूती दी है। वे कहते हैं कि ₹सादा जीवन जिएं ताकि दूसरे जीवित रह सकें।₹ यह दर्शन उन विकसित देशों और बड़े शहरों के लिए एक चेतावनी है जिनकी विलासितापूर्ण जीवनशैली का खामियाजा लद्दाख जैसे दूरदराज के इलाकों के लोगों को भुगतना पड़ता है। लद्दाख के लोग उस कार्बन उत्सर्जन का हिस्सा नहीं हैं जो ग्लेशियरों को पिघला रहा है, फिर भी वे इसके पहले शिकार बन रहे हैं। वांगचुक ने इस विडंबना को बखूबी पकड़ा है और इसे एक जन-आंदोलन में बदल दिया है। उनका तर्क है कि यदि लद्दाख को स्वायत्तता मिलती है, तो स्थानीय परिषदें यह तय कर सकेंगी कि किस तरह का विकास उनके पर्यावरण के अनुकूल है। वे विकास के विरोधी नहीं हैं, बल्कि वे 'सतत संयत विकास' के पक्षधर हैं जो मिट्टी, पानी और हवा की शुद्धता को गिरवी रखकर न किया जाए।

इस संघर्ष का एक और गहरा पहलू लद्दाख की सामरिक स्थिति और वहां की भू-राजनीति है। सीमावर्ती क्षेत्र होने के नाते वहां बुनियादी ढांचे का विकास आवश्यक है लेकिन वांगचुक का कहना है कि यह विकास स्थानीय लोगों और प्रकृति की सहमति के बिना नहीं होना चाहिए। जनजातीय समुदायों का अपनी जमीन से गहरा आध्यात्मिक जुड़ाव होता है , और जब बड़े औद्योगिक घराने सौर फार्म या खनन परियोजनाओं के नाम पर इस जमीन का अधिग्रहण करते हैं, तो न केवल पर्यावरण बल्कि एक प्राचीन संस्कृति का भी लोप होने लगता है। आंकड़ों के अनुसार, लद्दाख के कई हिस्सों में ब्लैक कार्बन का स्तर बढ़ रहा है जो बर्फ की सफेदी को कम कर उसे सूरज की रोशनी सोखने के लिए मजबूर करता है जिससे बर्फ तेजी से पिघलती है। यह एक दुष्चक्र है जिसे रोकने के लिए वांगचुक ने अपनी देह को कष्ट देकर गांधीवादी तरीके से दुनिया का ध्यान खींचने का प्रयास किया है। यह समझना आवश्यक है कि सोनम वांगचुक का यह प्रकरण केवल लद्दाख की जीत या हार का मामला नहीं है। यह इस बात का लिटमस टेस्ट है कि क्या आधुनिक लोकतंत्र प्रकृति की पुकार को सुनने की क्षमता रखता है।

यदि हम लद्दाख के ग्लेशियरों को नहीं बचा पाए, तो सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा जिससे अंततः पूरे भारतीय उपमहाद्वीप की जल एवं खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी। जनजातीय लोगों का संघर्ष वास्तव में मानवता के अस्तित्व का संघर्ष है। वांगचुक ने जो मशाल जलाई है, वह हमें याद दिलाती है कि प्रकृति के पास हमारी जरूरतों के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन हमारे लालच के लिए नहीं। इस प्रकरण का संदेश स्पष्ट है कि अब समय केवल चर्चाओं का नहीं, बल्कि कड़े निर्णयों का है ताकि आने वाली पीढ़ियों को हम केवल रेगिस्तान और सूखी नदियां विरासत में न दें। लद्दाख की यह गूंज आने वाले समय में वैश्विक पर्यावरण नीतियों को प्रभावित करने वाली एक निर्णायक आवाज साबित होगी क्योंकि यह सीधे तौर पर हमारी जीवनशैली और हमारे पर्यावरणीय भविष्य के बीच अंतर्संबंधों को चुनौती देती है।

परिवहन विशेष समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह में सम्मानित अतिथियों के बारे में

3RD PARIVAHAN VISHESH CONCLAVE & EXCELLENCE AWARD CEREMONY 2026

Sunday, 29TH March 2026. 01:00 pm Onwards . Mavlankar Hall, Constitutional Club, New Delhi - 110001

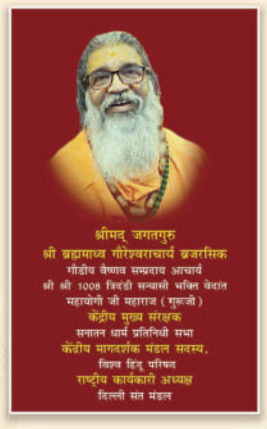

Guest of honor

श्रीमद् जगतगुरु श्री ब्रह्ममाधव गोरेश्वराचार्य ब्रजरसिक जी महाराज
केंद्रीय मुख्य संरक्षक सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा
केंद्रीय मार्गदर्शक मंडल सदस्य
विश्व हिंदू परिषद

3RD PARIVAHAN VISHESH CONCLAVE & EXCELLENCE AWARD CEREMONY 2026
Sunday, 29TH March 2026. 01:00 pm Onwards . Mavlankar Hall, Constitutional Club, New Delhi - 110001

Guest of honor

Mr. AJOY SHAH
FOUNDER CEO VEDD CONSULTANT TRAINER COACH & MENTOR, FIELDS OF SALES & MARKETING, COMMUNICATION, TYRE CARE & SAFETY

अजय शाह: एक दूरदर्शी नेतृत्वकर्ता, मार्गदर्शक और स्थिरता के प्रबल पैरोकार

श्री अजय शाह का परिचय देना हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। 'वेद कंसल्टेंट' के संस्थापक और सीईओ के रूप में, उनका करियर कॉर्पोरेट उत्कृष्टता और परिवर्तनकारी नेतृत्व का एक बेहतरीन उदाहरण है। टायर उद्योग में चार दशकों से अधिक की शानदार यात्रा के साथ, श्री शाह एक कॉर्पोरेट पावरहाउस से एक प्रतिष्ठित ट्रेनर, कोच और मेंटर के रूप में उभरे हैं।

कॉर्पोरेट उत्कृष्टता के शिल्पकार

अपने गौरवशाली कार्यकाल के दौरान, विशेष रूप से JK टायर में सेल्स ट्रेनिंग फंक्शन का नेतृत्व करते हुए, श्री शाह 600 सदस्यीय वैश्विक मार्केटिंग टीम की प्रेरक शक्ति रहे। वे उस दूरदर्शी सोच के धनी हैं जिसने 700 आउटलेट्स वाली 'JK टायर स्टील व्हील्स' रिटेल चेन की स्थापना की और 'डायल-ए-टायर' जैसी नवीन उपभोक्ता सेवाओं की शुरुआत की। सेल्स कैपेबिलिटी बिल्डिंग और चैनल मैनेजमेंट में उनकी विशेषज्ञता ने भारत भर के 6,000 से अधिक भागीदारों को सशक्त बनाया है।

विद्वत्ता और वैश्विक विशेषज्ञता

श्री शाह की योग्यताएं ज्ञान के प्रति उनकी अटूट जिज्ञासा को दर्शाती हैं। हंसराज कॉलेज और IMT गाजियाबाद के पूर्व छात्र होने के साथ-साथ उनके पास IIT दिल्ली, IIM लखनऊ और रटगर्स यूनिवर्सिटी (USA) से विशेष प्रमाणपत्र हैं। एक प्रमाणित प्रोफेशनल कोच और 'इमोशनल इंटेलिजेंस' विशेषज्ञ के रूप में, वे तकनीकी कौशल और सहानुभूतिपूर्ण नेतृत्व का एक दुर्लभ मेल प्रस्तुत करते हैं।

समाज और सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता

व्यापार से परे, श्री शाह एक समर्पित 'वायु मित्र' और टायर सुरक्षा विशेषज्ञ हैं। उनकी "ब्रीद दिल्ली" (Breathe Delhi) पहल और ATMA, SIAM तथा दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के साथ उनका सहयोग, स्थिरता (Sustainability) और सड़क सुरक्षा के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
देश के शीर्ष बी-स्कूलों के मेंटर और 'इंडियन सोसाइटी ऑफ ट्रेनिंग एंड डेवलपमेंट' के आजीवन सदस्य के रूप में, श्री अजय शाह अपने डिजिटल लर्निंग नवाचारों और संगठनात्मक एकीकरण के प्रति समर्पण के माध्यम से लाखों को प्रेरित कर रहे हैं।

3RD PARIVAHAN VISHESH CONCLAVE & EXCELLENCE AWARD CEREMONY 2026
Sunday, 29TH March 2026. 01:00 pm Onwards . Mavlankar Hall, Constitutional Club, New Delhi - 110001

Guest of honor

Maharaj Singh
Expert motor vehicle Act and rules

महाराज सिंह: राष्ट्रीय सुरक्षा और नियामक उत्कृष्टता के सजग प्रहरी

श्री महाराज सिंह का परिचय देना हमारे लिए बड़े गर्व की बात है। वे एक ऐसे प्रतिष्ठित विशेषज्ञ हैं जिनका संपूर्ण करियर राष्ट्र की सुरक्षा और संरक्षा के प्रति समर्पित रहा है। भारतीय वायु सेना के दिग्गज (Veteran) और एक अनुभवी नियामक अधिकारी के रूप में, श्री सिंह वर्तमान में सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) में सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं, जहाँ वे भारत के ऑटोमोटिव परिदृश्य को आकार देने में एक प्रमुख सूत्रधार की भूमिका निभा रहे हैं।

विमानन की सटीकता से सड़क मार्ग के नियमों तक

भारतीय वायु सेना में 15 वर्षों के कठोर अनुभव के साथ—जहाँ उन्होंने फ्लाइंग कंट्रोल से लेकर हाइड्रोलिक और न्यूमैटिक सिस्टम जैसे जटिल विमान प्रणालियों का प्रबंधन किया—श्री सिंह ने नागरिक प्रशासन में सैन्य-स्तर की सटीकता को शामिल किया। इसी मजबूत आधार ने दिल्ली सरकार (GNCT) के मोटर वाहन विभाग में उनके 26 वर्षों के शानदार कार्यकाल का मार्ग प्रशस्त किया, जहाँ उन्होंने रोडवर्थनेस (सड़क योग्यता), वाहन पंजीकरण और मोटर वाहन कानूनों के प्रवर्तन की बारीकियों में महारत हासिल की।

कानून निर्माण में एक दूरदर्शी

राष्ट्रीय स्तर पर, श्री सिंह उस कोर टीम के महत्वपूर्ण सदस्य हैं जो मोटर वाहन अधिनियम और केंद्रीय मोटर वाहन नियम (CMVR) में संशोधन के लिए जिम्मेदार है। महत्वपूर्ण सूचनाओं (Notifications) के प्रकाशन और 'ऑटोमोटिव उद्योग मानकों' (AIS) के विकास में उनकी विशेषज्ञता अत्यंत प्रभावशाली है। 'टाइप अप्रूवल सर्टिफिकेट' (TAC) से लेकर 'उत्पादन की अनुरूपता' (COP) तक, उनकी निगरानी यह सुनिश्चित करती है कि भारतीय सड़कों पर चलने वाला हर वाहन सुरक्षा के उच्चतम मानकों पर खरा उतरे।

बहुआयामी विशेषज्ञता

यांत्रिक सुरक्षा के अलावा, श्री सिंह भूमि अधिग्रहण कानून, सूचना का अधिकार (RTI) और व्यापक सड़क सुरक्षा रणनीतियों के विशेषज्ञ हैं। एक वायु सेना योद्धा से लेकर सेवानिवृत्त मोटर वाहन निरीक्षक और अब एक मंत्रालय सलाहकार तक की उनकी यात्रा अनुशासन, तकनीकी प्रतिभा और एक सुरक्षित व अधिक विनियमित भारत के निर्माण की अटूट प्रतिबद्धता की मिसाल है।

3RD PARIVAHAN VISHESH CONCLAVE & EXCELLENCE AWARD CEREMONY 2026
Sunday, 29TH March 2026. 01:00 pm Onwards . Mavlankar Hall, Constitutional Club, New Delhi - 110001

Guest of honor

Mukesh Dayal
ex DTO Delhi Transport Department

मुकेश दयाल: परिवहन शासन और सड़क सुरक्षा में उत्कृष्टता की एक मिसाल

श्री मुकेश दयाल ने दिल्ली सरकार (GNCTD) के परिवहन विभाग में 33 वर्षों की शानदार सेवा के बाद जिला परिवहन अधिकारी (DTO) के पद से सेवानिवृत्ति प्राप्त की है। उनका संपूर्ण कार्यकाल मोटर वाहन अधिनियम और सड़क सुरक्षा के कड़े कार्यान्वयन के प्रति समर्पित रहा है।

तकनीकी दक्षता और न्यायसंगत मूल्यांकन

अपने सेवाकाल के दौरान, उन्होंने मोटर वाहन अधिनियम 1988 और केंद्रीय मोटर वाहन नियम 1989 के विभिन्न प्रावधानों को लागू करने में केंद्रीय भूमिका निभाई। वे ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने के लिए 'दक्षता परीक्षण' (Test of Competence) के विशेषज्ञ रहे हैं, जिसमें ऑटोमेटेड ड्राइविंग टेस्ट ट्रैक जैसे उन्नत सिस्टम के माध्यम से चालक की क्षमता का सटीक मूल्यांकन किया जाता है। इसके अलावा, उन्होंने पीएसवी (PSV) बैज, कंडक्टर लाइसेंस और वाणिज्यिक ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने जैसी जटिल प्रक्रियाओं को भी कुशलतापूर्वक संपन्न किया।

पर्यावरण संरक्षण और न्यायिक अनुपालन

मुकेश दयाल जी ने दिल्ली की सबसे बड़ी चिंता—वाहन प्रदूषण—के प्रबंधन में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एक विशेष रूप से नामित पंजीकरण प्राधिकरण (Registering Authority) के रूप में, उन्होंने माननीय एनजीटी (NGT) और CAQM के निर्देशों पर प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों के खिलाफ निरंतर सख्त कार्रवाई की। उन्होंने MoRTH द्वारा निर्धारित उत्सर्जन मानकों (Emission Norms) को लागू करने में माननीय उच्चतम न्यायालय के दिशा-निर्देशों का अक्षरशः पालन सुनिश्चित किया।

सड़क सुरक्षा और जवाबदेही

सड़क सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाते हुए, उन्होंने विशेष रूप से नामित लाइसेंसिंग प्राधिकरण के रूप में घातक दुर्घटनाओं (Fatal Accidents) में शामिल लाइसेंस धारकों के विरुद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई भी की। वाहनों के सत्यापन, पंजीकरण और फिटनेस जांच में उनकी विशेषज्ञता ने दिल्ली की परिवहन व्यवस्था को सुरक्षित और सुव्यवस्थित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

3RD PARIVAHAN VISHESH CONCLAVE & EXCELLENCE AWARD CEREMONY 2026
Sunday, 29TH March 2026. 01:00 pm Onwards . Mavlankar Hall, Constitutional Club, New Delhi - 110001

Guest of honor

Yoginder Dagar
DGM (Cyclist)

योगेंद्र सिंह: वैश्विक पथिक और जीवटता के प्रेरणापुंज

श्री योगेंद्र सिंह का परिचय देना एक दुर्लभ सम्मान की बात है। उनका जीवन मानवीय इच्छाशक्ति की असीम संभावनाओं का एक जीता-जागता प्रमाण है। एयर इंडिया के पूर्व सहायक महाप्रबंधक रहे श्री सिंह ने एक प्रतिष्ठित कॉर्पोरेट लीडर से लेकर विश्व प्रसिद्ध एन्ड्योरेंस एथलीट, पर्यावरण योद्धा और प्रेरक वक्ता तक का सफर बेहद प्रभावशाली ढंग से तय किया है।

जीवटता के शिखर पुरुष

श्री सिंह ने दुनिया के सबसे कठिन और चुनौतीपूर्ण मैदानों में तिरंगा लहराया है। उन्होंने इंग्लैंड (1550 किमी) और फ्रांस (1250 किमी) में विश्व प्रसिद्ध लंबी दूरी की साइकिलिंग रेस सफलतापूर्वक पूरी की हैं। मध्य एशिया के पामीर हाईवे के दुर्गम रास्तों से लेकर मनाली-लेह और स्पीति घाटी के ऊंचे पहाड़ों तक, उनकी यात्राएं केवल भ्रमण नहीं, बल्कि इतिहास, सभ्यता और आत्म-खोज का एक गहरा शोध हैं। एक धावक (Marathoner) के रूप में भी उन्होंने लद्दाख और कारगिल की ऊंचाइयों से लेकर मुंबई और कोच्चि की सड़कों तक अपनी जीत के निशान छोड़े हैं।

सामाजिक परिवर्तन के सूत्रधार

उनकी साइकिल केवल यात्रा का साधन नहीं, बल्कि बदलाव का एक हथियार है। श्री सिंह ने भ्रष्टाचार के खिलाफ वैश्विक अभियान चलाए हैं और रोटरी क्लब के साथ मिलकर मधुमेह (Diabetes) की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य कार्यक्रमों का नेतृत्व किया है। दुनिया के एकमात्र 1300 किमी के सामुदायिक साइकिलिंग आयोजन 'टूर डी कलिंगा' के मुख्य आयोजक और IIT दिल्ली में 'ग्रीन ऊर्जा कॉन्क्लेव' के संयोजक के रूप में, वे सतत विकास (Sustainability) आंदोलन के अग्रदूत बने हुए हैं।

वैश्विक मान्यता और सम्मान

उत्कृष्टता के प्रति उनके अटूट समर्पण के लिए उन्हें ब्रिटिश संसद (हाउस ऑफ कॉमन्स) में 'एक्सीलेंस अवार्ड' और भारत सरकार के सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा प्रतिष्ठित 'ग्रीन ग्लोब अवार्ड' से सम्मानित किया गया है। IAS अधिकारियों के प्रशिक्षु बैचों के मेंटर और युवाओं की सशक्त आवाज़, योगेंद्र सिंह आज लाखों लोगों को उद्देश्यपूर्ण जीवन, फिटनेस और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

3RD PARIVAHAN VISHESH CONCLAVE & EXCELLENCE AWARD CEREMONY 2026
Sunday, 29TH March 2026. 01:00 pm Onwards . Mavlankar Hall, Constitutional Club, New Delhi - 110001

Guest of honor

Adv. Sangeeta Malhotra Talwar
Senior Panel Govt. Council for High court

एडवोकेट संगीता मल्होत्रा तलवार: न्याय, सशक्तिकरण और सामाजिक सुधार की प्रबल संवाहक

एडवोकेट संगीता मल्होत्रा तलवार का परिचय देना हमारे लिए गर्व का विषय है। वे एक गतिशील कानूनी विशेषज्ञ और समर्पित सामाजिक उत्प्रेरक हैं, जिनका जीवन सेवा और नेतृत्व की शक्ति का जीवंत उदाहरण है। उच्च न्यायालय की वरिष्ठ सरकारी पैनल काउंसिल और प्रतिष्ठित इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ ज्यूरिस्ट्स (लंदन) की सदस्य के रूप में, एडवोकेट तलवार ने भारत के कानूनी और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कानूनी प्रतिभा और शैक्षणिक योगदान

B.Sc., LLB और LLM की मजबूत शैक्षणिक पृष्ठभूमि के साथ, उन्होंने न केवल कानून का अभ्यास किया है, बल्कि उसे एक नई दिशा भी दी है। वे नए भारतीय आपराधिक कानून (Bharatiya Criminal Law) पर तुलनात्मक अध्ययन की लेखिका और रचनाकार हैं, जो पारंपरिक न्यायशास्त्र और आधुनिक कानूनी सुधारों के बीच एक सेतु का कार्य करता है। भारतीय बोध संघ के कानूनी प्रकोष्ठ (Legal Cell) की सदस्य के रूप में उनकी भूमिका संवैधानिक मूल्यों के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

शासन और जमीनी स्तर पर नेतृत्व

अदालत के कमरों से परे, एडवोकेट तलवार सार्वजनिक जीवन की एक सशक्त नेता हैं। भाजपा महिला मोर्चा (दिल्ली प्रदेश) की कार्यकारी सदस्य और प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पश्चिम लोकसभा) की अध्यक्षा के रूप में, उन्होंने परिवर्तनकारी सरकारी योजनाओं को धरातल पर उतारने में अहम भूमिका निभाई है। समाज की जड़ों से जुड़ते हुए वे RWFA और बिएनस्टार वेलफेयर ट्रस्ट की अध्यक्ष के रूप में बच्चों की शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के लिए निरंतर कार्यरत हैं।

सांस्कृतिक और सामाजिक नेतृत्व

राष्ट्रवादी मूल्यों में गहरी आस्था रखने वाली संगीता जी हिंदू आध्यात्मिक सेवा (RSS) की सदस्य हैं और हिंदू युवा वाहिनी की सलाहकार के रूप में भी अपनी सेवाएं दे रही हैं। स्वदेशी जागरण मंच की पूर्व सह-संयोजिका से लेकर अपनी वर्तमान बहुमुखी भूमिकाओं तक, एडवोकेट संगीता मल्होत्रा तलवार न्याय और सामाजिक समानता के क्षेत्र में एक मार्गदर्शक ज्योति बनी हुई हैं।

3RD PARIVAHAN VISHESH CONCLAVE & EXCELLENCE AWARD CEREMONY 2026
Sunday, 29TH March 2026. 01:00 pm Onwards . Mavlankar Hall, Constitutional Club, New Delhi - 110001

Guest of honor

Dr. Monika Koul
Professor from University of Delhi

प्रो. मोनिका कौल: वनस्पति विज्ञान और पर्यावरण संरक्षण की प्रखर ध्वजवाहक

डॉ. मोनिका कौल का परिचय देना हमारे लिए अत्यंत गौरव की बात है। वे दिल्ली विश्वविद्यालय में वनस्पति विज्ञान की प्रतिष्ठित प्रोफेसर हैं, जिनका शानदार करियर दो दशकों से अधिक के अभूतपूर्व शोध, शैक्षणिक नेतृत्व और पर्यावरण वकालत (Environmental Advocacy) तक फैला हुआ है। उच्चतम श्रेणी की विद्वान डॉ. कौल ने दिल्ली विश्वविद्यालय से अपनी एम.एससी., एम.फिल. (प्रथम स्थान प्राप्त) और पी.एच.डी. पूरी की, जिसने उनकी बौद्धिक कठोरता और वैज्ञानिक उत्कृष्टता की नींव रखी।

वैश्विक स्तर की विदुषी

एक कुशल शोधकर्ता और CSIR-JRF, SRF तथा रामशेषन साइंस राइटिंग फेलोशिप जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों की प्राप्तकर्ता, डॉ. कौल 'पौधे और पर्यावरण के आपसी संबंधों' के अध्ययन में एक प्रमुख हस्ती बन गई हैं। पारिस्थितिकी (Ecology), प्रजनन जीव विज्ञान और पर्यावरण प्रबंधन में उनकी विशेषज्ञता ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में व्यापक प्रकाशन और प्रदूषण व पादप जीव विज्ञान पर नीतिगत चर्चाओं को आकार देने का अवसर दिया है। दिल्ली स्कूल ऑफ क्लाइमेट चेंज एंड सस्टेनेबिलिटी की फेलो के रूप में, वे पारंपरिक वनस्पति विज्ञान और आधुनिक जलवायु लचीलेपन (Climate Resilience) के संगम पर खड़ी हैं।

प्रयोगशाला से परे गहरा प्रभाव

डॉ. कौल का प्रभाव केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं है। वे एक प्रसिद्ध मेंटर (मार्गदर्शक) हैं, जो अंतर-विषयक अनुसंधान का नेतृत्व करती हैं और प्रमुख राष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग को बढ़ावा देती हैं। पर्यावरण के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता उन्हें मिले 'ग्रीन ग्लोब अवार्ड' में झलकती है, जो विज्ञान संचार और पर्यावरण जागरूकता की दिशा में उनके अथक प्रयासों का प्रमाण है।

एक दूरदर्शी नेतृत्व

वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाओं का नेतृत्व करने से लेकर महत्वपूर्ण प्रशासनिक भूमिकाएँ निभाने तक, डॉ. मोनिका कौल संस्थागत विकास की भावना का प्रतीक हैं। वे केवल एक शिक्षक ही नहीं, बल्कि एक 'वैज्ञानिक-संचारकर्ता' हैं, जो वनस्पति विज्ञान और जन-भागीदारी की शक्ति के माध्यम से एक स्थायी भविष्य के निर्माण के लिए समर्पित हैं।

3RD PARIVAHAN VISHESH CONCLAVE & EXCELLENCE AWARD CEREMONY 2026
Sunday, 29TH March 2026. 01:00 pm Onwards . Mavlankar Hall, Constitutional Club, New Delhi - 110001

Guest of honor

PROF. DR. R.S. NEHRA
Academician, Entrepreneur National Security Educator Visionary Scholar, Strategist

प्रो. डॉ. आर.एस. नेहरा: एक प्रखर शिक्षाविद्, उद्यमी और राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीतिकार

प्रोफेसर (डॉ.) आर.एस. नेहरा एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं, जिनकी पहचान एक दूरदर्शी विद्वान, राष्ट्रीय सुरक्षा शिक्षक और एक कुशल रणनीतिकार के रूप में है। शिक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में नवाचार लाने के प्रति उनका समर्पण अतुलनीय है।

शैक्षणिक पृष्ठभूमि और अनुभव

इस संगठन (ICSS) की स्थापना से पहले, डॉ. नेहरा ने दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित 'कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज' (साउथ कैंपस) में लंबे समय तक अध्यापन कार्य किया। वर्ष 2008 तक दिल्ली विश्वविद्यालय में अपनी सेवाएं देने के दौरान, उन्होंने हज़ारों छात्रों के भविष्य को आकार दिया।

शिक्षा के क्षेत्र में नया अध्याय

शिक्षा को व्यावहारिक और उद्योग-केंद्रित बनाने के उद्देश्य से, उन्होंने वर्ष 2009 में 'प्रैग्मैटिक एजुकेशनल सोसाइटी' (PRAGMATIC EDUCATIONAL SOCIETY) की नींव रखी। इसी सोसाइटी के तत्वावधान में उन्होंने 'इंटरनेशनल कॉलेज फॉर सिक्योरिटी स्टडीज' (ICSS) की शुरुआत की।

राष्ट्रीय सुरक्षा और भविष्य की दृष्टि

ICSS के माध्यम से डॉ. नेहरा ने भारत में 'सुरक्षा अध्ययन' को एक नया आयाम दिया है। उनका लक्ष्य युवाओं को राष्ट्रीय सुरक्षा, रणनीतिक प्रबंधन और तकनीकी सुरक्षा के क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर सक्षम बनाना है। एक उद्यमी और विचारक के रूप में, वे शिक्षा जगत और सुरक्षा उद्योग के बीच की खाई को पाटने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

3RD PARIVAHAN VISHESH CONCLAVE & EXCELLENCE AWARD CEREMONY 2026
Sunday, 29TH March 2026. 01:00 pm Onwards . Mavlankar Hall, Constitutional Club, New Delhi - 110001

supported by :
TRYBOXS
www.tryboxs.in

TRANSPORT VISHESH NEWS LIMITED
www.newsparivahan.com, www.newstransport.in

3RD PARIVAHAN VISHESH CONCLAVE & EXCELLENCE AWARD CEREMONY 2026
Sunday, 29TH March 2026. 01:00 pm Onwards . Mavlankar Hall, Constitutional Club, New Delhi - 110001

TRANSPORT VISHESH NEWS LIMITED
www.newsparivahan.com, www.newstransport.in

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023